मई 2017

दादावाणी

कीमत ₹ 10

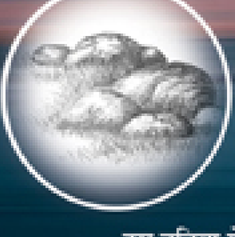

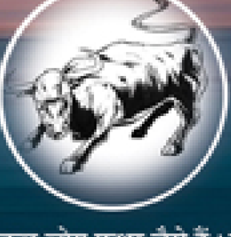

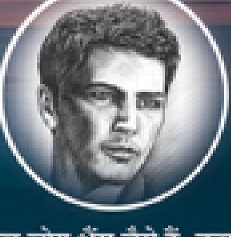

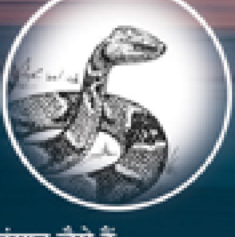

इस दुनिया में कुछ लोग पत्थर जैसे हैं। कुछ लोग भैंस जैसे हैं, कुछ इंसान जैसे हैं,

कुछ साँप जैसे हैं और कुछ खंभे जैसे हैं। हर तरह के लोग हैं।

अत: सामने वाले के साथ एडजस्ट हो जाओ। किसी के साथ टकराना मत।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 12 अंक : 7
अखंड क्रमांक : 139
मई 2017

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta **on behalf of**
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

सामने वाले के साथ अनुकूल होने से खपेगी प्रकृति

संपादकीय

आत्मज्ञान मिलने के बाद खुद को पुरुष (आत्मा) पद प्राप्त होता है। उसके बाद अपनी प्रकृति का *निकाल* करना ही बाकी बचता है। मोक्ष में जाने के लिए सिर्फ अपनी प्रकृति को खपाना है। यदि प्रकृति को खपा दिया तो भगवान बन जाएगा।

प्रकृति को खपाना अर्थात् अपनी प्रकृति को सामने वाले के मुताबिक, उनके अनुकूल करके, अनुकूल होकर समभाव से *निकाल* करना। यों तो हम दिनभर में बहुत सी बातों में एडजस्टमेन्ट लेते ही रहते हैं लेकिन अब हमें जीवित व्यक्तियों के साथ भी एडजस्टमेन्ट लेकर उनके साथ अनुकूल होना है। इसके लिए अगर हम सामने वाले की प्रकृति को पहचान लेंगे, तो सरलता से एडजस्टमेन्ट ले सकेंगे।

इस काल में तो भिन्न-भिन्न प्रकृतियाँ हैं, तब फिर 'एडजस्ट' हुए बगैर कैसे काम चलेगा? कोई नोबल होता है, कोई कंजूस, कोई टेढ़ा होता है, कोई बात-बात पर नाराज़ हो जाता है, तो उसके साथ हम एडजस्ट हो जाएँगे। अब अगर वह टेढ़ा चले और हम भी टेढ़े चलेंगे तो सॉल्यूशन कब आएगा? इसलिए हमें सरल हो जाना है। यदि हर एक बात में हम एडजस्ट हो जाएँगे तो सॉल्यूशन आएगा और एडजस्ट होते-होते हमारा अहंकार, हमारे कषाय खत्म हो जाएँगे। एडजस्ट कौन नहीं होने देता? हमारे क्रोध-मान-माया-लोभ, मनमानी (धार्युं) करना, मोह, कर्तापन। अब जब हम खुद की प्रकृति को सामने वाले के अनुकूल करने जाएँगे तब हमारे कषायों को खाली होना ही पड़ेगा। हम किसी बात को पकड़कर नहीं रख सकते? उसके पीछे हमारा हेतु क्या है? एडजस्ट क्यों होना है? वह इसलिए क्योंकि, हमें छूटना है।

'एडजस्ट एवरीव्हेर' कब हो पाएँगे? दादाश्री कहते हैं, 'जब टकराव टालेंगे तब।' हमें अपनी मोक्ष की सेफ साइड के लिए, अपनी खुद की सुरक्षा के लिए, टकराव टालना है। अब तो हमें सीमंधर स्वामी के पास पहुँचकर मोक्ष में जाना है। इसलिए अब हमारा किसी के साथ बैर न बंधे और सभी फाइलों का हिसाब खत्म हो जाए उस तरह से हर एक फाइल के साथ टकराव टालकर, समभाव से *निकाल* कर लेना है। इसके लिए सामने वाले को अनुकूल आए, उसे संतोष हो, उसे दुःख न रहे और समाधान हो जाए उस तरह से *निकाल* कर लेना है। अगर सामने वाले के मन का समाधान नहीं करोगे तो वह जनम-जनम का बैर बाँधेगा और जब तक किसी का भी क्लेम बाकी रहेगा, तब तक हम मोक्ष में नहीं जा सकेंगे। इसलिए हमें किसी भी तरह से सामने वाले के मन का समाधान हो, उस तरह से, समभाव से *निकाल* कर देना है। पुरुषार्थ उसे कहते हैं, जिसमें ज्ञान मिलने के बाद प्रकृति को समभाव से खपा देते हैं।

प्रस्तुत संकलन में दादाश्री द्वारा बताई गई चाबियों का उपयोग करके, एडजस्टमेन्ट लेकर, टकराव टालकर और फाइलों का समभाव से *निकाल* करके (अपनी) खुद की प्रकृति को कैसे खपाएँगे उसकी जानकारी दी गई है, जो हमें अपनी प्रकृति को खपाने का पुरुषार्थ करने में बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

सामने वाले के साथ अनुकूल होने से खपेगी प्रकृति

प्रकृति को खपाना अर्थात् क्या?

प्रश्नकर्ता : आप्तवाणी में लिखा है कि 'कोई प्रकृति त्याग वाली होती है, कोई प्रकृति तप वाली होती है, कोई प्रकृति विलासी होती है। मोक्ष में जाने के लिए सिर्फ आपकी प्रकृति को खपाना है।' तो प्रकृति को खपाना अर्थात् क्या?

दादाश्री : वह ठीक है। प्रकृति खपाना अर्थात् अपनी प्रकृति को सामने वाले के साथ अनुकूल करके, अनुकूल होकर समभाव से *निकाल* (निपटारा) करना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मोक्ष में जाने के लिए प्रकृति को किस तरह से खपाते हैं।

दादाश्री : प्रकृति का समभाव से *निकाल* करते हैं। और पाँच आज्ञा का पालन करते हैं। वे पाँच आज्ञा हैं न, आज्ञा में रहकर रिलेटिव-रियल देखने से प्रकृति खपती जाती है।

प्रकृति खपा देंगे तो बन जाएँगे भगवान

यों हर एक की प्रकृति होती है और यदि उस प्रकृति को खपाए तो भगवान बन जाए। अगर खुद की प्रकृति को खुद जाने तो भगवान बनने की शुरुआत हो गई और फिर जानने के बाद समभाव से *निकाल* करके उसे खपा दे। प्रकृति को देखे, क्या-क्या किसके साथ, चंदू भाई दूसरों के साथ क्या कर रहे हैं? उसे खुद देखता है। प्रकृति को देखता रहे, उसी को खपाना कहते हैं। व्यवहार में खपाना अर्थात् समभाव से खपाना। मन को विचलित नहीं होने देना। कषायों को मंद करके बैठे रहना और खपाते रहना, उसी को खपाना कहते हैं।

प्रकृति खपेगी, सामने वाले के साथ एडजस्ट होने से

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगर किसी की प्रकृति विलासी हो तो उस प्रकृति को खपाकर मोक्ष में कैसे जाएँगे? वह मुझे समझ में नहीं आया!

दादाश्री : हाँ, उसे खपाकर कर जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : परंतु, वह कैसे! उसे समझाइए?

दादाश्री : क्या लोग जलेबी नहीं खाते? हाफूस के आम नहीं खाते? वह सब विलास ही है न! क्या उनमें विलास नहीं है? ये सभी जीव विलासी कहलाएँगे। कोई ज़्यादा विलासी होता है, कोई कम विलासी। अर्थात् अपनी प्रकृति को सामने वाले के अनुकूल करके, समभाव से *निकाल* करके खपा दिया जाए, तो उसे प्रकृति को खपाना कहते हैं।

अगर सामने वाला कहे कि मुझे खिचड़ी बनानी है और हम कहें कि नहीं, 'चावल बनाओ, उसके बगैर तो नहीं चलेगा।' तब फिर वहाँ पर लड़ने में क्या मज़ा आएगा? यों तो इंसान को एडजस्ट हो जाना चाहिए। जिसे एडजस्ट होना

नहीं आता हो, उसे इंसान ही नहीं कहते, उसे हैवान कहते हैं। क्या कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : उसे हैवान कहते हैं।

दादाश्री : हाँ, एडजस्ट, घर के लोगों के साथ तो एडजस्ट होने चाहिए। अगर हम बाहर वालों के साथ एडजस्ट नहीं हो पाएँ तो वह अलग बात है लेकिन यदि घर वालों के साथ एडजस्ट नहीं होंगे तो हैवान कहलाएँगे। बाहर वालों के साथ तो शायद किसी कारण से न भी हो पाएँ लेकिन शादी की है तो क्या शादी करने के बाद एडजस्ट नहीं होना चाहिए? हमें उन्हें मनाना नहीं चाहिए?

जिसे दूसरों के साथ अनुकूल होना आ जाता है, उसे कोई दु:ख ही नहीं रहता। 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! प्रत्येक के साथ एडजस्टमेन्ट हो जाए, यही सब से बड़ा धर्म है। इस काल में तो भिन्न-भिन्न प्रकृतियाँ हैं तो फिर एडजस्ट हुए बिना कैसे चलेगा?

प्रकृति को पहचानना आना चाहिए

घर में एडजस्टमेन्ट नहीं हो पाता, उसकी वजह क्या है? परिवार में ज़्यादा सदस्य हों, उन सब के साथ ताल-मेल नहीं रहता। फिर बात का बतंगड़ बन जाता है। वह किसलिए? लोगों का स्वभाव, एक जैसा नहीं होता। जैसा युग होता है, वैसा स्वभाव हो जाता है। सत्युग में आपसी मेल होता था। घर में सौ सदस्य हों, फिर भी सब दादा जी के कहे अनुसार चलते थे और इस कलियुग में तो अगर दादा जी कुछ कहें तो उन्हें बड़ी-बड़ी गालियाँ सुनाते हैं। पिता कुछ कहे तो पिता को भी वैसा ही सुनाते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्लेश होने का कारण क्या है? स्वभाव नहीं मिलता, इसलिए?

दादाश्री : अज्ञानता की वजह से। संसार का मतलब ही यह है कि 'किसी का स्वभाव किसी से मिलता ही नहीं।' यह 'ज्ञान' मिले, उसके लिए एक ही रास्ता है, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! अगर कोई आपको मारे तो भी आप उसे 'एडजस्ट' हो जाना।

एक व्यक्ति मुझ से कहने लगा कि, 'दादा जी, मेरी बीवी घर में ऐसा करती है, वैसा करती है।' तब मैंने उसे कहा कि आपकी पत्नी से पूछेंगे तो वह क्या कहेगी कि 'मेरा पति ही कमअक़्ल है।' अब इसमें आप सिर्फ अपने लिए ही न्याय क्यों खोजते हो? तब उस व्यक्ति ने कहा कि, 'मेरा घर तो बिल्कुल बिगड़ गया है, बच्चे बिगड़ गए हैं, बीवी बिगड़ गई है।' मैंने कहा, 'कुछ भी नहीं बिगड़ा है।' आपको वह 'देखना' नहीं आता है। आपको अपना घर 'देखना' आना चाहिए। हर एक की प्रकृति को पहचानना आना चाहिए।

खेत नहीं, यह है बगीचा

आपका घर तो बगीचा है। सत्युग, द्वापरयुग और त्रेता में घर खेत जैसे होते थे। किसी खेत में सिर्फ गुलाब ही, किसी खेत में सिर्फ चंपा, किसी में केवड़ा, ऐसा था। अब इस कलियुग में खेत नहीं रहे, बगीचे बन गए हैं इसलिए एक गुलाब, एक मोगरा और एक चमेली! अब आप घर में बुजुर्ग, गुलाब हों और घर में सब को गुलाब बनाना चाहते हो, दूसरे फूलों से कहते हो कि मेरे जैसा क्यों नहीं है। तू तो सफेद है। तेरा सफेद फूल क्यों आया? गुलाबी फूल ला। ऐसे सामने वाले को मारते रहते हो! अरे! फूल को देखना तो सीखो। आपको इतना ही करना है कि यह कैसी प्रकृति है? किस प्रकार का फूल है? फल-फूल आए, तब तक पौधे को देखते रहना है कि यह कैसा पौधा है? मुझ में काँटे हैं और इसमें नहीं हैं। मेरा गुलाब का पौधा

है, इसका गुलाब का नहीं है। फिर फूल आएँ, तब आप जानो कि 'ओहोहो! यह तो मोगरा है!' तब उसके साथ मोगरे जैसा व्यवहार रखना चाहिए। चमेली हो तो उस अनुसार वर्तन रखना चाहिए। सामने वाले की प्रकृति के अनुसार वर्तन रखना चाहिए। पहले तो घर में बुजुर्ग होते थे तब फिर उनके कहे अनुसार बच्चे चलते थे, बहुएँ चलती थीं। जबकि कलियुग में अलग-अलग प्रकृतियाँ हैं, वे किसी से मेल नहीं खाते, इसलिए इस काल में तो घर में सब की प्रकृति के स्वभाव के साथ एडजस्ट होकर ही काम लेना चाहिए। वह एडजस्ट नहीं होगा तो रिलेशन बिगड़ जाएँगे इसीलिए बगीचे को संभालो और गार्डनर बन जाओ। वाइफ की प्रकृति अलग होती है, बेटों की अलग, बेटियों की अलग-अलग प्रकृति होती हैं। यानी कि हर एक की प्रकृति का लाभ उठाओ।

भिन्न-भिन्न प्रकृतियों को पहचानकर, टकराव टालिए

अब इंसान तो इंसान ही है लेकिन आपको पहचानना नहीं आता। घर में पचास लोग हों, लेकिन आपको पहचानना नहीं आया इसलिए बखेड़ा होता रहता है। उन्हें पहचानना तो चाहिए न? अगर घर में एक व्यक्ति किच-किच करता रहता है तो वह तो उसका स्वभाव ही है इसलिए आपको एक बार में समझ लेना चाहिए कि 'यह ऐसा है'। आप सचमुच पहचान जाते हो कि 'यह ऐसा ही है?' फिर आगे उसमें कुछ जाँच करने की ज़रूरत है क्या? पहचान ने के बाद आपको जाँच करने की कोई ज़रूरत नहीं रहती। कुछ लोगों को रात को देर से सोने की आदत होती है और कुछ लोगों को जल्दी सोने की आदत होती है, तो उन दोनों का मेल कैसे बैठेगा? और परिवार में सभी सदस्य साथ रहते हों तो क्या होगा? घर में एक व्यक्ति ऐसा कहने वाला निकले कि 'आप कमअक़्ल हैं', तब आपको ऐसा समझ लेना चाहिए कि यह ऐसा ही कहेगा इसलिए आपको एडजस्ट हो जाना चाहिए। इसके बजाय अगर आप उसे जवाब दोगे तो थक जाओगे। क्योंकि वह तो आप से टकराया लेकिन आप भी उससे टकराएँगे तो ऐसा प्रमाणित हो जाएगा न कि आपकी भी आँखे नहीं है न! मैं क्या कहना चाहता हूँ कि 'प्रकृति का साइन्स जानो'। बाकी, आत्मा तो अलग वस्तु है।

हम प्रत्येक प्रकृति को जान चुके हैं इसलिए तुरंत पहचान लेते हैं। अत: हम हर एक के साथ उसकी प्रकृति के अनुसार रहते हैं। अगर हम सूर्य के साथ दोपहर बारह बजे दोस्ती करेंगे तो क्या होगा? इस प्रकार यदि हम समझ लेंगे कि यह ग्रीष्म का सूर्य है, यह जाड़े का सूर्य है, ऐसा सब समझ लेंगे तो क्या फिर कठिनाई होगी?

हम प्रकृति को पहचानते हैं इसलिए आप टकराना चाहो तो भी मैं टकराने नहीं दूँगा, मैं खिसक जाऊँगा। वर्ना दोनों का एक्सिडेन्ट हो जाएगा और दोनों के स्पेयर पार्ट्स टूट जाएँगे। किसी का बम्पर टूट जाए तो भीतर बैठे हुए की क्या हालत होगी? बैठने वाले की तो दुर्दशा हो जाएगी न! इसलिए प्रकृति को पहचानो। घर में सभी की प्रकृतियों को पहचान लेना है।

ऐसे होती है वश में, सामने वाले की प्रकृति

प्रकृति को हमें पहचानना चाहिए कि यह गुलाब है, गुलाब क्या अपने वश में आ सकता है? काँटे नहीं चुभें ऐसा कर सकता है? हमें संभालकर काम निकाल लेना है उससे, तब प्रकृति वश में हो सकती है। गुलाब कब वश में आता है? काँटे नहीं लगें उस तरह संभालकर हम फूल ले लें, तब गुलाब वश में आता है। उसी

तरह से, हम यह कहना चाहते हैं। वर्ना गुलाब क्या कभी बदलेगा? वह तो आपने हाथ डाला कि काँटा लगेगा ही। काँटा लगता है न? मुझे लगता है माली को छोड़ देते होंगे! नहीं? माली को भी नहीं छोड़ते, जो उन्हें सींचता है? किसी को नहीं छोड़ता?

प्रकृति को पहचानकर, काम लेना

इंसानों में भी ये सारी प्रकृतियों को पहचानना आ जाए न तो फिर हम समझ जाएँगे कि 'यह नीम है, इसे छू सकते हैं। इसके नीचे बैठ सकते हैं लेकिन इसके पत्ते मुँह में नहीं डाल सकते।' क्या नीम के नीचे नहीं बैठते हैं लोग?

प्रश्नकर्ता : हाँ, बैठते हैं। ठंडक लेते हैं।

दादाश्री : अरे, उसके पत्ते लेकर ऐसे सूँघते हैं लेकिन मुँह में नहीं डालते। जानते हैं कि कड़वा ही है, जन्म से ही कड़वा है। मनुष्य की प्रकृति ऐसी नहीं है। कई बार जो प्रकृति कड़वी होती है न, वह कुछ उम्र बीतने पर मीठी हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : बदल जाती है?

दादाश्री : क्योंकि मनुष्य बदलता हुआ है। एवर चेन्जिंग (निरंतर बदलता रहता) है और इन लोगों (पेड़-पौधों) में जो चेन्ज है वह सिर्फ एक जन्म में फल देने के लिए ही है जबकि हम (मनुष्य) तो फल भी देते हैं और कर्मबंधन भी करते हैं। इसलिए हम ऐसा नहीं कह सकते कि यह हमेशा के लिए चोर है।

प्रश्नकर्ता : नीम हमेशा ही कड़वा रहेगा, क्या ऐसा कह सकते हैं?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : और इंसान हमेशा कड़वा ही रहेगा, ऐसा नहीं कह सकते।

दादाश्री : नहीं! हमें पहचान लेना चाहिए कि इस व्यक्ति में क्या है? साधारण रूप से ऐसा देख लेना चाहिए। जैसे कि ये भाई हैं न, इन्हें ऐसे जाँच लिया, पहचान सकते हैं कि ये भाई ऐसे ही हैं। कल सुबह अगर चेन्ज हो जाएँ तो बड़ा महान ज्ञानीपुरुष बन सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या लगभग पूरी ज़िंदगी मनुष्य की प्रकृति एक जैसी रह सकती है?

दादाश्री : हाँ। रह सकती है न! कई लोगों में रहती है इसीलिए लोग कहते हैं न कि प्राण और प्रकृति दोनों साथ में जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा सिद्धांत नहीं है कि ऐसी ही रहेगी?

दादाश्री : इंसान के लिए नहीं है, बाकी के सभी जीवों के लिए ऐसा ज़रूर है।

प्रकृति को पहचानकर उससे काम लेना चाहिए। तू झक पकड़ ले और मैं भी ऐसा होऊँ कि झक पकड़ लूँ तो क्या फिर मज़ा आएगा? नहीं! मैं जान जाता हूँ कि इसने झक पकड़ी है तो फिर मुझे वहाँ पर नरम हो जाना चाहिए क्योंकि झक पकड़ने वाले का गुनाह नहीं है। उसकी यह प्रकृति ही ऐसी है। ज्ञान चाहे कितना भी हो लेकिन प्रकृति के अनुसार झक पकड़ता ही है।

प्रकृति को पहचानने से, रहेगी वीतरागता

इस व्यवहार में तो सामने वाले की प्रकृति को पहचानकर रखना है, और क्या? स्वभाव। सामने वाले का स्वभाव अर्थात् हमें ऐसा रहे कि 'यह भाई आया इसलिए अब झंझट नहीं है। यहाँ पर कोट-वोट सबकुछ सौंपकर आराम से जाओ, कोट में दो लाख हों और वह उसे सौंपकर कहीं जाएँ तो भी हर्ज नहीं है, ऐसा हम जानते भी हैं।

अगर प्रकृति स्वभाव पहचानते हो तो उसे सौंप सकते हो। और किसी को नहीं सौंपना, देखना।

सामने वाले की प्रकृति को पहचान जाएँ तो उसके साथ वीतरागता रहती है कि यह गुलाब का पौधा है और काँटे लग रहे हैं तो गुलाब में काँटें होते ही हैं ऐसा पक्का हो जाता है। उसके बाद काँटों पर गुस्सा नहीं आता। अगर हमें गुलाब चाहिए तो काँटे सहने ही पड़ेंगे। प्रकृति की पहचान होना, वह ज्ञान है और ज्ञान हो गया है तो वर्तन में आएगा ही, बस।

अर्थात् अगर प्रकृति को हम पहचान गए कि इस व्यक्ति में यह गुण है तो फिर उसके साथ वीतरागता रहेगी। हम जानते हैं कि यह इसका दोष नहीं है, यह तो उसकी प्रकृति ही ऐसी है!

गुण देखना, दोष नहीं

इस जगत् में जो कुछ भी हो रहा है, वह प्रकृति के गुणों से हो रहा है, आत्मा के गुणों से नहीं हो रहा इसलिए हर एक को प्रकृति के गुणों को पहचान लेना चाहिए। प्रकृति के दोषों की वजह से सामने वाला दोषित लगता है। हमें खुद प्रकृति के गुणों को ही देखना है। इससे क्या होता है कि 'उन' दोषों को मज़बूत होने का अवकाश ही नहीं मिलता।

हमारे इतने सारे, हज़ारों महात्मा हैं, फिर भी क्यों सब के साथ रास आता है? क्योंकि सभी प्रकृतियों को हम पहचानते हैं। उनके काँटों को हम नहीं छूते, हम तो उनके फूलों को ही देखते हैं!

यदि चंपा, गुलाब की भूल निकाले कि, 'तुझ में काँटे हैं, तुझ में कोई बरकत नहीं,' तो गुलाब उससे कहता कि, 'तू तो सूखे ठूँठ जैसा दिखता है' और झगड़ा हो जाता। बगीचे में यदि ये प्रकृतियाँ बोल सकतीं तो पूरे बगीचे में लड़ाई-झगड़ा हो जाता। उसी तरह यह संसार भी बगीचा ही है। यह (मनुष्य) प्रकृति बोलती है, इसलिए औरों की भूल निकालने से लड़ाई-झगड़े हो जाते हैं।

जहाँ प्रकृति के अनुसार करते हैं, वहाँ क्या भूल देखेंगे

अन्यथा बाकी सब तो हर एक की प्रकृति के अनुसार होता है। जिसकी जैसी प्रकृति उसी तरह से करना है। सभी लोग कहीं गीत नहीं गाने वाले हैं, वह तो कोई गायक हो तो गीत गाएगा। हर कोई अपनी प्रकृति के अनुसार काम करता है। उसमें भला क्या भूल निकालनी? वह अपनी कुशलता के अनुसार करता है। हर कोई अपनी कुशलता के अनुसार काम करता है। खुद की डिज़ाइन के अनुसार नहीं करवा सकते कि 'मेरी डिज़ाइन' के अनुसार ही तुझे 'चलना पड़ेगा,' ऐसा नियम नहीं है।

अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार काम कर रहे हैं तो, उसमें भूल कहाँ हुई? क्या यह न्यायाधीश का डिपार्टमेन्ट है? हर कोई अपनी प्रकृति के अनुसार काम कर रहा है। मैं भी अपनी प्रकृति अनुसार काम करता रहता हूँ। प्रकृति तो रहती ही है न!

एडजस्ट होना आ जाए तो काम हो जाएगा

सभी में शक्तियाँ अलग-अलग होती हैं और कमियाँ भी अलग-अलग। सत्युग में कैसा था कि यदि घर में एक तीखी प्रकृति होती थी तो घर के सभी लोग तीखे होते थे। अभी कलियुग में एक तीखा, दूसरा खट्टा और तीसरा कड़वा ऐसे अलग-अलग प्रकृति के लोग होते हैं इसीलिए एडजस्टमेन्ट ही नहीं हो पाता। पति जल्दी उठे और पत्नी देर से उठे तो फिर सुबह-सुबह ही कलह खड़ी हो जाती है। और इस तरह संसार

खारा कर देते हैं लेकिन यदि प्रकृति को एडजस्ट होना आ जाए, तो काम हो जाए।

व्यवहार निभाना किसे कहेंगे कि जो 'एडजस्ट एवरीव्हेर' हो जाए! अब डेवेलपमेन्ट का ज़माना आया है। मतभेद नहीं होने देना इसलिए अभी लोगों को मैंने सूत्र दिया है, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! एडजस्ट, एडजस्ट, एडजस्ट! अगर कढ़ी खारी बनी तो समझ लेना कि दादा ने 'एडजस्टमेन्ट' लेने को, कहा है फिर थोड़ी सी कढ़ी खा लेना। हाँ, अचार याद आए तो फिर मँगवा लेना कि 'थोड़ा सा अचार ले आओ।' लेकिन झगड़ा नहीं, घर में झगड़ा नहीं होना चाहिए। खुद अगर किसी जगह मुसीबत में फँस जाए, तब वहाँ खुद ही एडजस्टमेन्ट कर ले तो भी संसार सुंदर लगेगा।

संसार में भले ही और कुछ भी नहीं आए लेकिन 'एडजस्ट' होना आना चाहिए। दूसरा कुछ भले ही नहीं आए, कोई हर्ज नहीं। व्यापार करना कम आता हो, तब भी हर्ज नहीं लेकिन 'एडजस्ट' होना आना चाहिए। सामने वाला 'डिसएडजस्ट' होता रहे और आप एडजस्ट होते रहोगे तो संसार-सागर तैरकर पार उतर जाओगे।

जिसे छूटना है, उसे एडजस्ट हो जाना चाहिए

तेरे साथ जो-जो डिसएडजस्ट होने आए, उसके साथ तू एडजस्ट हो जा। दैनिक जीवन में यदि सास-बहू के बीच या देवरानी-जेठानी के बीच डिसएडजस्टमेन्ट होता हो तो जिसे इस संसार के घटनाचक्र से छूटना हो उसे एडजस्ट हो ही जाना चाहिए। पति-पत्नी में से यदि कोई एक, दरार डाले तो दूसरे को जोड़ लेना चाहिए, तभी संबंध निभेगा और शांति रहेगी। जिसे एडजस्टमेन्ट लेना नहीं आता, उसे लोग 'मेन्टल' कहते हैं। इस रिलेटिव सत्य में आग्रह, जिद करने की ज़रा सी भी ज़रूरत नहीं है। 'मनुष्य' तो कौन है कि 'जो एवरीव्हेर एडजस्टेबल हो जाए।' चोर के साथ भी एडजस्ट हो जाना चाहिए।

फरियादी बनने के बजाय एडजस्ट हो जाओ

ऐसा है न, घर में भी 'एडजस्ट' होना आना चाहिए। आप सत्संग से घर पर देर से पहुँचो तो घर वाले क्या कहेंगे? कि 'ज़रा टाइम पर आना चाहिए न?' तब आप जल्दी घर जाओ तो क्या बुरा है? बैल भी जब नहीं चलता, तब उसे अंकुश से मारते हैं। इसके बजाय अगर वह चलता रहे तो वह अंकुश नहीं चुभोएगा न! वर्ना तो वह अंकुश चुभोएगा, और उसे चलना पड़ेगा। चलना तो है ही न? आपने देखा है ऐसा? जिसमें पीछे कीलें होती हैं न, उससे मारता है। गूँगा प्राणी क्या करे? किससे शिकायत करे वह?!

इन लोगों को तो यदि कोई अंकुश चुभोए तो उन्हें दूसरे बचाने निकलते हैं। वह गूँगा प्राणी किससे फरियाद करे? अब इस बैल को क्यों इस तरह मार खानी पड़ी? क्योंकि पहले बहुत फरियाद की थी, उसका ऐसा परिणाम आया। उस दिन सत्ता मिली थी, तब फरियाद करता रहा। अब सत्ता नहीं है इसलिए फरियाद किए बगैर रहना चाहिए। अत: अब 'प्लस-माइनस' कर दो। इसके बजाय फरियादी ही नहीं बनें तो क्या बुरा है? फरियादी बनेंगे तो आरोपी बनने का समय आएगा न? अपने को तो आरोपी भी नहीं होना है और फरियादी भी नहीं होना है। सामने वाला गालियाँ दे जाए तो उसे जमा कर देना है फरियादी बनना ही नहीं है न! आपको क्या लगता है? फरियादी बनना अच्छा है? लेकिन इसके बजाय पहले से ही 'एडजस्ट' हो जाएँ तो क्या बुरा?

एडजस्टमेन्ट लेने का तरीका

प्रश्नकर्ता : एडजस्ट कैसे होना चाहिए? यह ज़रा समझाइए।

दादाश्री : मान लो आपको किसी कारणवश देर हो गई और पत्नी कुछ उल्टा-सुल्टा बोलने लगे कि, 'इतनी देर से आए हो? मुझे ऐसा नहीं चलेगा।' और ऐसा-वैसा कहे... उसका दिमाग़ फिर जाए। तब आप कहना कि 'हाँ, तेरी बात सही है, तू कहे तो वापस चला जाऊँ और तू कहे तो अंदर आकर बैठूँ।' तब वह कहेगी, 'नहीं, वापस मत जाना। यहाँ सो जाओ चुपचाप।' लेकिन फिर पूछो, 'तू कहे तो खाऊँ, वर्ना सो जाऊँ।' तब यदि वह कहे, 'नहीं, खा लो।' तब आपको उसका कहा मानकर खा लेना चाहिए। अर्थात् एडजस्ट हो गए। फिर सुबह फर्स्ट क्लास चाय देगी और अगर धमकाया तो फिर चाय का कप मुँह फुलाकर देगी और तीन दिन तक वही सिलसिला जारी रहेगा।

एडजस्ट होना नहीं आए तो क्या करते हैं? लोग वाइफ के साथ झगड़ा करते हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : ऐसा?! क्या बँटवारे के लिए? वाइफ के साथ क्या बाँटना है? जायदाद तो साझेदारी में है।

प्रश्नकर्ता : पति को गुलाबजामुन खाने हों और बीवी खिचड़ी बनाए तो फिर झगड़ा हो जाता है।

दादाश्री : फिर झगड़ा करने के बाद क्या वह गुलाबजामुन बनाएगी? नहीं। बाद में भी खिचड़ी ही खानी पड़ती है!

प्रश्नकर्ता : फिर होटल से पिज़्ज़ा मँगवाते हैं।

दादाश्री : ऐसा?! अर्थात् यह भी गया और वह भी गया। पिज़्ज़ा आ जाते हैं, नहीं?! लेकिन हमारे गुलाबजामुन तो गए न? उसके बजाय अगर आपने वाइफ से कहा होता कि, 'तुम्हें जो ठीक लगे वह बनाओ।' उसे भी किसी दिन खिलाने की भावना तो होगी न! वह खाना नहीं खाएगी? तब आप कहना, 'तुम्हें ठीक लगे वह बनाना।' तब वह कहेगी, 'नहीं, आपको जो ठीक लगे, वह बनाना है।' तब आप कहना कि, 'गुलाबजामुन बनाओ।' और अगर आप पहले से ही गुलाबजामुन बनाने को कहो तो वह कहेगी, 'नहीं, मैं तो खिचड़ी बनाऊँगी।'वह टेढ़ा ही बोलेगी।

जो पहले बोले, उसके साथ एडजस्ट हो जाओ

प्रश्नकर्ता : ऐसे मतभेद बंद करने के लिए आप कौन सा रास्ता बताते हैं?

दादाश्री : मैं तो यही रास्ता बताता हूँ कि, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'। वह कहे कि, 'खिचड़ी बनानी है', तो आप 'एडजस्ट' हो जाना। और आप कहो कि, 'नहीं, अभी हमें बाहर जाना है, सत्संग में जाना है', तो उसे 'एडजस्ट' हो जाना चाहिए। जो पहले बोले, उसके साथ एडजस्ट हो जाओ।

प्रश्नकर्ता : तब तो पहले बोलने के लिए झगड़े होंगे।

दादाश्री : हाँ, ऐसा करना। ऐसा करना लेकिन उससे 'एडजस्ट' हो जाना। क्योंकि तेरे हाथ में सत्ता नहीं है। वह सत्ता किसके हाथ में है, वह मैं जानता हूँ। तो फिर इसमें 'एडजस्ट' हो जाने में कोई हर्ज है भाई?

प्रश्नकर्ता : नहीं, बिल्कुल भी नहीं।

दादाश्री : बहन जी, आपको हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तब फिर उसका *निकाल* कर दो न!

अगर भटकना है तो घर में *चलण* रखो

घर में आपको अपना *चलण* (वर्चस्व, सत्ता) नहीं रखना चाहिए, जो व्यक्ति *चलण* रखता है उसे भटकना पड़ता है। हमने भी हीरा बा से कह दिया था कि 'हम खोटा सिक्का हैं। हमें भटकना नहीं पुसाता न!' नहीं चलने वाला सिक्का हो उसका क्या करते हैं? उसे भगवान के पास बैठे रहना होता है। घर में आपका *चलण* चलाने जाओगे तो टकराव होगा न? अब तो समभाव से *निकाल* करना है।

आपको नाश्ते से लेना-देना है या *चलण* से? इसलिए किस रास्ते नाश्ता अच्छा मिलेगा वह ढूँढ निकालो। यदि म्युनिसिपालिटी वाले नोट करके रखते कि घर में किसका *चलण* है, तो मैं भी एडजस्ट नहीं होता। यह तो कोई बाप भी नोट नहीं करता!

दूषमकाल में सुखी होने का रास्ता

सब से बड़ा दुःख क्या है? 'डिसएडजस्टमेन्ट'। वहाँ 'एडजस्ट एवरीव्हेर' कर लें तो क्या हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : उसमें तो पुरुषार्थ चाहिए।

दादाश्री : कोई पुरुषार्थ नहीं चाहिए। दादा ने कहा है कि 'एडजस्ट एवरीव्हेर' पालन करना है, तो 'एडजस्ट' होता रहेगा। बीवी कहे कि, 'तुम चोर हो'। तो कहना कि 'यू आर करेक्ट।' अगर बीवी डेढ़ सौ की साड़ी लाने को कहे तो आप पच्चीस रुपए ज़्यादा देना तो फिर छः महीने तक तो चलेगा!

जो कार्य जल्दी निपटाना हो, उसके लिए क्या करना पड़ेगा? 'एडजस्ट' हो जाएँगे या फिर कहेंगे 'दावा कर'? 'एडजस्ट' होकर जल्दी निपटा देना, वर्ना बढ़ता जाएगा या नही? बीवी के साथ लड़ने के बाद रात को नींद आएगी क्या? और सुबह अच्छा नाश्ता भी नहीं मिलेगा।

इस दूषमकाल में सुखी होने का, मैं कहता हूँ वह, अलग रास्ता है। मैं इस काल के लिए कह रहा हूँ। आप अपना नाश्ता क्यों बिगाड़ें? सुबह में नाश्ता बिगड़े, दोपहर में खाना बिगड़े, पूरा दिन बिगड़ेगा।

अशांति उत्पन्न न हो, ऐसी युक्ति

यह 'दादा' के 'एडजस्टमेन्ट' का विज्ञान है, आश्चर्यकारी 'एडजस्टमेन्ट' है यह। और जहाँ 'एडजस्ट' नहीं हो पाए, वहाँ उसका स्वाद तो आता ही रहेगा न आपको? यह 'डिसएडजस्टमेन्ट' ही मूर्खता है। क्योंकि वह जाने कि अपना स्वामित्व मैं छोड़ूँगा नहीं, और मेरा ही *चलण* रहना चाहिए! तो पूरी ज़िंदगी भूखा मरेगा और एक दिन 'पोइज़न' पड़ेगा थाली में। सहज चलता है, उसे चलने दो न! यह तो कलियुग है! वातावरण ही कैसा है? इसलिए बीवी कहे कि 'आप नालायक हो,' तो कहना 'बहुत अच्छा।'

प्रश्नकर्ता : हमें बीवी 'नालायक' कहे, वह तो उकसाया हो ऐसा लगता है।

दादाश्री : तो फिर आपको क्या उपाय करना चाहिए? उसे ऐसा कहना है कि 'तू दो बार नालायक है।' और उससे क्या आपकी नालायकी मिट गई? आप पर मुहर लगी, मतलब आप दो बार मुहर लगाएँगे? फिर नाश्ता बिगड़ेगा, पूरा दिन बिगड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : 'एडजस्टमेन्ट' की बात है, उसके पीछे भाव क्या है फिर कहाँ पहुँचना है?

दादाश्री : भाव शांति का है, शांति का हेतु है। अशांति पैदा नहीं करने की युक्ति है।

एडजस्ट होने से होगी प्रगति की शुरुआत

'एडजस्ट एवरीव्हेर'! इसमें कोई हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, बिल्कुल भी नहीं।

दादाश्री : अगर पति पहले कहे कि, 'आज प्याज के पकौड़े, लड्डू, सब्ज़ी सब बनाओ,' तब आप एडजस्ट हो जाना और अगर आप कहो कि 'आज जल्दी सो जाना है' तो उन्हें एडजस्ट हो जाना चाहिए। (पति से) आपको किसी दोस्त के वहाँ जाना हो, फिर भी मुल्तवी करके जल्दी सो जाना क्योंकि दोस्त के साथ झमेला होगा तो देखा जाएगा लेकिन यहाँ घर में मत होने देना। लोग दोस्त के साथ अच्छा रखने के लिए घर में झंझट करते हैं, ऐसा नहीं होना चाहिए। अर्थात् अगर वह पहले बोले तो आपको 'एडजस्ट' हो जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अगर पति को आठ बजे कहीं मीटिंग में जाना हो और पत्नी कहे कि, 'अब सो जाइए', तब फिर वह क्या करे?

दादाश्री : ऐसी कल्पनाएँ नहीं करनी हैं। कुदरत का नियम ऐसा है कि 'व्हेर देयर इज़ ए विल, देयर इज़ ए वे' (जहाँ चाह, वहाँ राह!) कल्पना करोगे तो बिगड़ेगा। उस दिन वे ही कहेंगी कि 'आप जल्दी जाओ, जल्दी जाओ' खुद गैरेज तक छोड़ने आएँगी, कल्पना करने से सब बिगड़ता है। इसीलिए एक पुस्तक में लिखा है, 'व्हेर देयर इज़ विल, देयर इज़ वे' इतना पालन करोगे तो बहुत हो गया।

घर में 'वाइफ' कहे कि 'अभी दिन है' तो आप 'नहीं, अभी रात है' कहकर झगड़ने लगो तो उसका कब पार आएगा? आप उसे कहो कि 'मैं तुझ से विनती करता हूँ कि रात है, ज़रा बाहर जाँच ले न!' तब भी वह कहे कि 'नहीं, दिन ही है।' तब आप कहना, 'यू आर करेक्ट। मुझ से भूल हो गई।' तो आपकी प्रगति शुरू होगी, नहीं तो इसका पार आए, ऐसा नहीं है। ये तो 'बाइपासर' (राहगीर) हैं सभी। 'वाइफ' भी 'बाइपासर' है।

अपना अभिप्राय सामने वाले पर नहीं थोपना है

हमे पहले अपना मत नहीं रखना चाहिए। सामने वाले से पूछना चाहिए कि इसके बारे में आप क्या कहना चाहते हैं? अगर सामने वाला अपनी बात पर अड़ा रहे तो मैं अपनी बात छोड़ देता हूँ। हमें तो यही देखना है कि कैसे भी करके सामने वाले को दुःख न हो। अपना अभिप्राय सामने वाले पर नहीं थोपना है। हमें सामने वाले का अभिप्राय लेना चाहिए। हम तो सभी के अभिप्राय लेकर 'ज्ञानी' बने हैं। यदि मैं अपना अभिप्राय किसी पर थोपने जाऊँगा तो मैं ही कच्चा पड़ जाऊँगा? अपने अभिप्राय से किसी को दुःख नहीं होना चाहिए।

आपके 'रेवोल्यूशन' अठारह सौ हों और सामने वाले के छः सौ हों और अगर आप अपना अभिप्राय उस पर थोप दोगे तो उसका 'इंजन' टूट जाएगा। उसके सारे 'गीयर' बदलने पड़ेंगे।

सीखो, 'काउन्टर पुली' डालना

प्रश्नकर्ता : 'रेवोल्यूशन' का मतलब क्या है?

दादाश्री : यह जो सोचने की स्पीड है, वह हर एक की अलग-अलग होती है। कुछ घटित हो जाए तो मन एक मिनट में तो कितना ही दिखा देता है, उसके सारे पर्याय 'एट ए टाइम' दिखा देता हैं। इन बड़े-बड़े प्रेसिडन्ट के एक मिनट के बारह सौ 'रेवोल्यूशन' घूमते हैं और हमारे पाँच हज़ार घूमते हैं और भगवान महावीर के लाख 'रेवोल्यूशन' घूमते थे!

मतभेद होने का कारण क्या है? आपकी पत्नी के सौ 'रेवोल्यूशन' हों और आपके पाँच सौ 'रेवोल्यूशन' हों और आपको बीच में 'काउन्टर पुली' डालना नहीं आता है इसलिए चिनगारियाँ निकलती हैं और झगड़े होते हैं। अरे! कभी-कभी तो 'इंजन' भी टूट जाता है। 'रेवोल्यूशन' समझे आप? आप इस मज़दूर से बात करते हो तो आपकी बात उस तक नहीं पहुँचती क्योंकि उसके 'रेवोल्यूशन' पचास और आपके पाँच सौ हैं। किसी के हज़ार होते हैं, किसी के बारह सौ होते हैं, जैसा जिसका डेवेलपमेन्ट होता है, उसके अनुसार 'रेवोल्यूशन' होते हैं। जब आप बीच में 'काउन्टर पुली' डालोगे, तभी आपकी बात उस तक पहुँचेगी। 'काउन्टर पुली' यानी आपको बीच में पट्टा डालकर आपके रेवोल्यूशन घटाने पड़ेंगे। मैं हर एक व्यक्ति के साथ 'काउन्टर पुली' डाल देता हूँ। ऐसा नहीं है कि सिर्फ अहंकार निकाल देने से ही काम हो जाएगा। 'काउन्टर पुली' भी हर एक के साथ डालनी पड़ती है। इसी कारण मेरा किसी से मतभेद ही नहीं होता न! मैं जानता हूँ कि इस भाई के इतने ही 'रेवोल्यूशन' हैं इसलिए उसके अनुसार मैं 'काउन्टर पुली' डाल देता हूँ। मेरा तो छोटे बच्चे के साथ भी बहुत जमता है क्योंकि मैं उसके साथ चालीस रेवोल्यूशन लगाकर बात करता हूँ। इससे मेरी बात उस तक पहुँचती है, वर्ना वह 'मशीन' टूट जाएगी।

प्रश्नकर्ता : कोई भी सामने वाले के लेवल पर आ जाए, तभी बात हो सकती है?

दादाश्री : हाँ, जब उसके 'रेवोल्यूशन' पर आ जाएगा तभी बात हो सकेगी। आपके साथ बातचीत करते हुए हमारे रेवोल्यूशन कहाँ से कहाँ तक घूम आए! पूरी दुनिया घूम आते हैं! आपको 'काउन्टर पुली' डालना नहीं आता, उसमें कम 'रेवोल्यूशन' वाले इंजन का क्या दोष है? वह तो आपका दोष है कि आपको 'काउन्टर पुली' डालना नहीं आया!

ज़्यादा लाइट वाले को होना है एडजस्ट

प्रश्नकर्ता : हम किसी एक 'लेवल' पर आ गए और दूसरे लोग उस 'लेवल' पर नहीं हैं। अब उनके साथ काम तो करना ही है इसलिए कई बार वहाँ फिर मेल नहीं खाता।

दादाश्री : यों मेल तो नहीं खाएगा न! मेल नहीं खाएगा लेकिन हमें उसके साथ 'एडजस्ट' होना है। इसीलिए मैंने कहा है न कि वहाँ 'समभाव से *निकाल*' करना।

ऐसा है न, हमारे पास अधिक 'लाइट' हो तो उसे 'डिम' की जा सकती है लेकिन 'डिम' लाइट वाला नहीं बढ़ा सकेगा। अपनी 'लाइट' ज़्यादा है न इसलिए 'डिम लाइट' करके उसके साथ बैठना। आपकी 'लाइट' बढ़ जाए तो इस भाई से किस तरह काम लेना है, वह 'फिट' कर देते हो न? ऐसे सभी जगह 'फिट' कर देना। आपको 'फिट' कर देना है, अनंत शक्तियाँ हैं! आप 'दादा' का नाम लेकर कहो कि 'हे दादा जी, मुझे 'फिट' हो जाए' तो 'फिट' हो जाएगा तुरंत। आपके भाव में पक्का है कि किसी को किंचित्मात्र दु:ख नहीं हो। ऐसा आपने तय किया हो तो उसे दु:ख होगा ही नहीं। इसलिए आपको तय करना चाहिए।

प्रकृति अर्थात् मशीन

प्रकृति तो मशीन है और मशीनरी के साथ ऐसे *आड़ाई* (अहंकार का टेढ़ापन) कैसे की जा सकती है? मशीन से अगर ऐसा कहें, उस गियर से कि 'देख मैं ऊँगली लगा रहा हूँ, मैंने तुझे बनाया है। तू मेरी ऊँगली के बीच में मत आना!' लेकिन वह तो काट ही डालेगी। फिर चाहे वह

हमने बनाई हो या किसी और ने क्योंकि मिकेनिकल एडजस्टमेन्ट है। वैसे यह प्रकृति मिकेनिकल है अत: हमें दादा से ऐसा सीख लेना है तो वह मिकेनिकल एडजस्टमेन्ट ढीला पड़ जाएगा। हो सकता है या नहीं हो सकता ऐसा? हमारे पास से एक बार कला सीख जाओ। यह बोधकला अर्थात् अहिंसक कला है, हिंसक कला नहीं है। हाँ, मोक्ष में ले जाए ऐसी है। अत: अब यह जन्म बिगाड़ मत देना!

फ्यूज़ उड़ जाए तब

इतना ही पहचान लेना है कि यह 'मशीनरी' कैसी है! उसका 'फ्यूज़' उड़ जाए तो किस प्रकार 'फ्यूज़' लगाना है। सामने वाले की प्रकृति से 'एडजस्ट' होना आना चाहिए। अगर सामने वाले का 'फ्यूज़' उड़ जाता है, तब भी हमारा तो एडजस्टमेन्ट रहता है लेकिन अगर सामने वाले का 'एडजस्टमेन्ट' टूट जाएगा तो क्या होगा? 'फ्यूज़' उड़ गया, फिर तो वह दीवार से टकराएगा, दरवाज़े से टकराएगा लेकिन तार नहीं टूटा है, कनेक्शन नहीं टूटा है। इसलिए अगर कोई फ्यूज़ लगा दे तो फिर सब ठीक हो जाएगा, वर्ना तब तक वह उलझता रहेगा।

अब, वाइफ का किसी पड़ोसन के साथ झगड़ा हो गया हो और उसका दिमाग़ गरम हो गया हो, तभी आप बाहर से आएँ और वह उग्रता से बात करे, तब आप क्या करोगे? आप भी उग्र हो जाओगे? जब ऐसे संयोग आ जाए तब, वहाँ पर हमें एडजस्ट होकर चलना चाहिए। आज वह किस संयोग से क्रोधित हुई है, किसके साथ क्रोधित हुई है, क्या मालूम? आप पुरुष हो, मतभेद मत होने देना। वह मतभेद डाले तो मना लेना। मतभेद अर्थात् टकराव!

जैसा भी मिला हो वह सोने का

हर एक बात में हम सामने वाले के साथ 'एडजस्ट' हो जाएँ तो कितना आसान हो जाएगा। हमें साथ में क्या ले जाना है? कोई कहेगा कि भाई उसे सीधा करो। अरे, उसे सीधा करने जाएगा तो तू टेढ़ा हो जाएगा। इसलिए वाइफ को सीधा करने मत जाना, जैसी हो उसे 'करेक्ट' कहना।

इसलिए आपको उन्हें सीधा नहीं करना है। वे आपको सीधा न करें। जैसा मिला वही सोने का। प्रकृति किसी की, कभी भी सीधी नहीं हो सकती। कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी ही रहती है, इसलिए आप संभलकर चलना। जैसी हो वैसी भले ही हो, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'।

धमकाने की जगह पर आप नहीं धमकाओ, तो वाइफ अधिक सीधी रहती है। जो गुस्सा नहीं करता उसका ताप बहुत सख्त होता है। ये हम किसी को कभी भी डाँटते नहीं हैं, फिर भी हमारा ताप बहुत लगता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर वह सीधी हो जाएगी?

दादाश्री : सीधा होने का मार्ग पहले से यही है। वह कलियुग के लोगों को पुसाता नहीं हैं लेकिन उसके बगैर छुटकारा भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह मुश्किल बहुत है।

दादाश्री : ना, ना वह मुश्किल नहीं है, वही आसान है। गाय के सींग गाय को भारी।

प्रश्नकर्ता : हमें भी वह मारती है न?

दादाश्री : किसी दिन लग जाता है। वह सींग मारने आए तो ऐसे खिसक जाते हैं, वैसे यहाँ पर भी खिसक जाना है!

एक ही समय में दो लोगों के साथ एडजस्टमेन्ट

प्रश्नकर्ता : बहुत बार ऐसा होता है कि

एक समय में दो लोगों के साथ एक ही बात पर 'एडजस्टमेन्ट' लेना होता है, तो एक ही समय में सभी ओर किस तरह ले सकते हैं?

दादाश्री : दोनों के साथ लिया जा सकता है। अरे, सात लोगों के साथ भी लेना हो, तब भी लिया जा सकता है। एक पूछे, 'मेरा क्या किया?' तब कहें, 'हाँ भाई, तेरे कहे अनुसार करूँगा। दूसरे को भी ऐसा कहेंगे, 'आप कहोगे वैसा करूँगा।' 'व्यवस्थित' के बाहर होने वाला नहीं है इसलिए चाहे जैसे झगड़ा खड़ा मत करना।'

यह तो सही और गलत कहने से भूत परेशान करते हैं। हमें तो दोनों को एक जैसा कर देना है। इसे 'अच्छा' कहा इसलिए दूसरा 'गलत' हो गया, इसलिए फिर वह परेशान करता है। पर दोनों का मिक्स्चर कर डालें इससे फिर असर नहीं रहेगा। 'एडजस्ट एवरीव्हेर' की हमने खोज की है। सही कह रहा हो उसके साथ और गलत कह रहा हो उसके साथ 'एडजस्ट' हो। हमें कोई कहे, 'आपमें अक्ल नहीं है', तो हम उसके साथ तुरंत 'एडजस्ट' हो जाएँगे और उसे कहेंगे कि 'यह तो पहले से ही नहीं थी! तू अभी कहाँ खोजने आया है? तुझे तो आज उसका पता चला, लेकिन मैं तो बचपन से ही जानता हूँ।' ऐसा कहें तो झंझट मिट जाएगी न? फिर वह हमारे पास अक्ल ढूँढने आएगा ही नहीं। ऐसा नहीं करें तो 'अपने घर' (मोक्ष में) कब पहुँच पाएँगे?

एडजस्टमेन्ट ही न्याय है

हम यह सरल और सीधा रास्ता बता देते हैं और ये टकराव क्या रोज़-रोज़ होते हैं? वह तो जब अपने कर्म का उदय हो तब होता है, उतना ही हमें 'एडजस्ट' करना है। घर में 'लीला' (पत्नी) के साथ झगड़ा हुआ हो तो झगड़ा होने के बाद 'लीला' को होटल में ले जाकर, खाना खिलाकर खुश कर देना, अब ताँता नहीं रहना चाहिए।

'एडजस्टमेन्ट' को हम 'न्याय' कहते हैं। आग्रह-दुराग्रह, वह कोई न्याय नहीं कहलाता। किसी भी प्रकार का आग्रह न्याय नहीं है। हम किसी का आग्रह नहीं पकड़ते। जिस पानी से मूँग गलें उससे गला लें, अंत में गटर के पानी से भी गला लें!!

डाकू मिल जाए और उसके साथ 'डिसएडजस्ट' होंगे तो वे मारेंगे। उसके बदले हम निश्चित करें कि उसके साथ 'एडजस्ट' होकर काम लेना है। फिर उसे पूछे कि 'भाई तेरी क्या इच्छा है? देख भाई हम तो यात्रा करने निकले हैं। ऐसे उसके साथ एडजस्ट हो जाते हैं।'

यह बाँद्रा की खाड़ी बदबू मारे तो उसे क्या लड़ने जाते हैं? वैसे ही ये मनुष्य बदबू मारते हैं, उन्हें कुछ कहने जाना चाहिए? बदबू मारने वाले सभी खाड़ियाँ कहलाते हैं और सुगंधी आए वे बाग कहलाते हैं। जो-जो बदबू मारते हैं, वे सब कहते हैं कि आप हमारे प्रति वीतराग रहो।

यह 'एडजस्ट एवरीव्हेर' नहीं होगा तो पागल हो जाओगे सब। सामने वाले को छेड़ते रहोगे, उससे ही वे पागल होते हैं। इस कुत्ते को एक बार छेड़ें, दूसरी बार, तीसरी बार छेड़ें तब तक वह हमारी आबरू रखता है लेकिन फिर बहुत छेड़छाड़ करें तो वह भी काट लेता है। वह भी समझ जाता है कि यह रोज़ छेड़ता है, यह नालायक है, बेशर्म है। यह बात समझने जैसी है। कुछ भी झंझट करना नहीं है, एडजस्ट एवरीव्हेर।

एडजस्ट होने से बढ़ती हैं शक्तियाँ

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में रहना है इसलिए 'एडजस्टमेन्ट' एक पक्षीय तो नहीं होना चाहिए न?

दादाश्री : व्यवहार तो उसी को कहेंगे कि, 'एडजस्ट' हो जाएँ ताकि पड़ोसी भी कहें कि 'सभी घरों में झगड़े होते हैं लेकिन इस घर में झगड़ा नहीं है।' उसका व्यवहार सर्वोत्तम कहलाएगा। जिसके साथ रास न आए, वहीं पर शक्तियाँ विकसित करनी हैं। अनुकूल है, वहाँ तो शक्ति है ही। प्रतिकूल लगना, वह तो कमज़ोरी है। मुझे सब के साथ क्यों अनुकूलता रहती है? जितने 'एडजस्टमेन्ट' लोगे, उतनी शक्तियाँ बढ़ेंगी और अशक्तियाँ टूट जाएँगी। सही समझ तो तभी आएगी, जब सभी प्रकार की उल्टी समझ को ताला लग जाएगा।

टेढ़े के साथ भी एडजस्टमेन्ट लेना सीखो

नरम स्वभाव वालों के साथ तो हर कोई 'एडजस्ट' होगा लेकिन अगर टेढ़े, कठोर, गर्म मिज़ाज लोगों के साथ, सभी के साथ 'एडजस्ट' होना आ जाएगा तो काम बन जाएगा। कितना ही नंगा-लुच्चा इंसान क्यों न हो, फिर भी उसके साथ 'एडजस्ट' होना आ जाए, दिमाग़ फिरे नहीं तो वह काम का है। भड़क जाओगे तो नहीं चलेगा। संसार की कोई चीज़ हमें 'फिट' नहीं होगी, हम ही उसे 'फिट' हो जाएँ तो दुनिया सुंदर है और यदि उसे 'फिट' करने गए तो दुनिया टेढ़ी है। इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेर!' आप उसे 'फिट' हो जाओ तो कोई हर्ज नहीं है।

सामने वाला टेढ़ा हो फिर भी 'ज्ञानी' तो उसके साथ 'एडजस्ट' हो जाते हैं। 'ज्ञानीपुरुष' को देखकर चलेगा तो सभी तरह के एडजस्टमेन्ट लेना सीख जाएगा। इसके पीछे का साइन्स क्या कहता है कि 'वीतराग बन जाओ, राग-द्वेष मत करो।' यह तो भीतर थोड़ी आसक्ति रह जाती है, इसलिए मार पड़ती है। व्यवहार में जो एकपक्षीय-निस्पृह हो चुके हों, वे टेढ़े कहलाते हैं।

क्या इस काल में लॉ देखना चाहिए?

डोन्ट सी लॉज़, प्लीज़ सेटल। सामने वाले को 'सेटलमेन्ट' लेने को कहना कि 'आप ऐसा करो, वैसा करो', ऐसा कहने के लिए वक्त ही कहाँ है? सामने वाले की सौ भूलें हों, फिर भी आपको तो यह कहकर आगे बढ़ जाना है कि 'मेरी ही भूल है'। इस काल में लॉ (कानून) थोड़े ही देखा जाता है? यह तो आखिरी हद तक पहुँच चुका है। जहाँ देखें वहाँ भागदौड़, भागम्भाग! लोग उलझ गए हैं। घर जाए तो वाइफ की शिकायतें, बच्चों की शिकायतें, नौकरी पर जाए तो सेठ जी की शिकायतें, रेल में जाए तो भीड़ में धक्के खाता है। कहीं भी चैन नहीं। चैन तो होना चाहिए न? कोई लड़ पड़े तो उस पर दया आनी चाहिए कि 'अरे, इसे कितना तनाव होगा कि लड़ पड़ा!' जो चिढ़ जाएँ, वे सभी कमज़ोर हैं।

हम दीवार से टकराएँ तो दोष हमारा या दीवार का?

प्रश्नकर्ता : हमें क्लेश नहीं करना हो लेकिन अगर कोई सामने आकर झगड़ने लगे, तब क्या करें?

दादाश्री : अगर दीवार के साथ लड़े तो कितने समय तक लड़ सकेगा? कभी यदि इस दीवार से सिर टकरा जाए तो आप उसके साथ क्या करोगे? सिर टकराया, यानी आपकी दीवार से लड़ाई हो गई, अब क्या दीवार को मारोगे? इसी प्रकार ये जो बहुत क्लेश करवाते हैं, वे सभी दीवारें हैं! इसमें सामने वाले को क्या देखना, आपको अपने आप समझ लेना है कि ये दीवारों जैसे हैं, फिर कोई तकलीफ नहीं रहेगी।

प्रश्नकर्ता : हम मौन रहें तो सामने वाले पर उल्टा असर होता है कि 'इन्हीं का दोष है' फिर वह ज़्यादा क्लेश करता है।

दादाश्री : यह तो आपने मान लिया है कि 'मैं मौन रहा, इसलिए ऐसा हुआ।' रात को कोई आदमी उठा और बाथरूम जाते समय अंधेरे में दीवार से टकरा गया तो क्या वहाँ पर वह इसलिए टकरा गई कि आप मौन रहे?

मौन रहो या बोलो, उसे स्पर्श ही नहीं करता, कुछ लेना-देना नहीं है। ऐसा कुछ नहीं है कि हमारे मौन रहने से सामने वाले पर असर होता है और ऐसा भी नहीं है कि हमारे बोलने से असर होता है। 'ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' हैं। किसी की इतनी भी सत्ता नहीं है। बिल्कुल सत्ताविहीन जगत्, उसमें कोई क्या कर सकता है? यदि इस दीवार के पास सत्ता होती तो सामने वाले के पास भी सत्ता होती। क्या आपके पास इस दीवार को डाँटने की सत्ता है? ऐसा ही सामने वाले के लिए है। और उसकी वजह से जो टकराव है, वह तो छोड़ेगा नहीं, उससे बच नहीं सकते। व्यर्थ शोर मचाने का क्या मतलब? जबकि उसके हाथ में सत्ता ही नहीं है। इसलिए आप भी दीवार जैसे बन जाओ न! आप बीवी को डाँटते रहते हो लेकिन उसके अंदर जो भगवान बैठे हैं, वे नोट करते हैं कि यह मुझे डाँट रहा है! और यदि वह आपको डाँटे, तब आप दीवार जैसे बन जाओ तो आपके भीतर बैठे हुए भगवान आपको 'हेल्प' करेंगे।

अत: दीवार तभी टकराती है जब हमारी भूल हो। उसमें दीवार का कसूर नहीं है। तब लोग मुझ से पूछते हैं कि, 'क्या ये सभी लोग दीवार हैं?' तब मैं कहता हूँ कि, 'हाँ, लोग भी दीवार ही हैं।' यह मैं 'देखकर' बता रहा हूँ, यह कोई गप्प नहीं है।

दरवाज़ा कहाँ है? वह खोज निकालो

किसी के साथ मतभेद होना और दीवार से टकराना, ये दोनों बातें एक समान हैं। इन दोनों में भेद नहीं है। दीवार से जो टकराता है, वह दिखाई नहीं देने की वजह से टकराता है और जो मतभेद होता है, वह भी दिखाई नहीं देने की वजह से होता है। आगे का उसे दिखाई नहीं देता, आगे का उसे सोल्यूशन नहीं मिलता, इसलिए मतभेद होता है। ये जो क्रोध-मान-माया-लोभ वगैरह करते हैं, वे भी दिखाई नहीं देने की वजह से ही करते हैं! तो ऐसे बात को समझना चाहिए न! जिसे चोट लगी, उसी का दोष है न! दीवार का कोई दोष है? तो इस संसार में सभी दीवारें ही हैं। दीवार टकराए, तब आप उसके साथ आप ऐसे लड़ने की झंझट में नहीं पड़ते हैं न कि 'मेरी बात सही है'? वैसे ही ये सभी दीवार की स्थिति में ही हैं। उससे अपनी बात को सही मनवाने की ज़रूरत ही नहीं है।

आप ऐसा समझ लो कि जो टकराते हैं, वे दीवारें ही हैं। फिर 'दरवाज़ा कहाँ है,' उसे ढूँढो तो अंधेरे में दरवाज़ा मिल जाएगा। यों हाथों से टटोलते-टटोलते जाओ तो दरवाज़ा मिलता है या नहीं मिलता? और फिर वहाँ से निकल जाओ। टकराना नहीं। इस नियम का पालन करना कि 'मुझे किसी से टकराव में नहीं आना है।'

ऐसा रास्ता निकालो कि टकराव न हो

ऐसे सीधे-सीधे जा रहे हों और बीच में इलेक्ट्रिक का खंभा आता हो तो आपको समझना चाहिए। आप उसे कहो कि तू कौन बीच में रोकने वाला? सामने से भैंसा आ रहा हो तो क्या हमें उसे ऐसा कहना चाहिए कि हट जा, हट जा!

प्रश्नकर्ता : वह नहीं चलेगा।

दादाश्री : वहाँ हमें हट जाना चाहिए। साँप आ रहा हो तो?

प्रश्नकर्ता : यह तो जानवरों की दुनिया हुई।

दादाश्री : यह जो जानवरों के बारे में कह रहा हूँ, मनुष्य भी वैसे ही हैं।

प्रश्नकर्ता : उन्हें परखें किस तरह?

दादाश्री : समझ में आ जाता है अपने को, उसके सींग ऊपर करे तो हम नहीं समझ जाएँगे कि यह भैंसा है? तब हमें खिसक जाना चाहिए। मुझे तो उनके आने से पहले ही पता चल जाता है। सुगंध पर से ही पहचान लेता हूँ। कुछ पत्थर जैसे होते हैं। कुछ लोग भैंस जैसे हैं, कुछ गाय जैसे हैं, कुछ इंसान जैसे हैं, कुछ साँप जैसे हैं और कुछ खंभे जैसे हैं। हर तरह के लोग हैं। अब ऐसा रास्ता निकालना ताकि तू उनके साथ टकराव में न आए।'

जहाँ टकराव, वहाँ अपनी ही भूल

प्रश्नकर्ता : स्वभाव नहीं मिलते, इसीलिए जीवन में टकराव होता है न?

दादाश्री : टकराव होना, उसी को संसार कहते हैं!

प्रश्नकर्ता : टकराव होने का कारण क्या है?

दादाश्री : अज्ञानता। जब तक किसी के भी साथ मतभेद होता है, तो वह आपकी निर्बलता की निशानी है। लोग गलत नहीं हैं, मतभेद में गलती आपकी है। लोगों की गलती है ही नहीं। वह अगर जान-बूझकर भी करे तो भी वहाँ पर हमें क्षमा माँग लेनी चाहिए कि, 'भाई, यह मेरी समझ में नहीं आता है।' लोग गलती करते ही नहीं हैं। लोग ऐसे हैं ही नहीं कि मतभेद होने दें। जहाँ टकराव हुआ, वहाँ अपनी ही भूल है।

प्रश्नकर्ता : खंभा बीच में हो और टकराव टालना हो, तब हम एक तरफ होकर खिसक जाएँ, लेकिन अगर खंभा खुद आकर हम पर गिर जाए, तब वहाँ हम क्या करें?

दादाश्री : गिरे तो खिसक जाना।

प्रश्नकर्ता : कितना भी खिसकने जाएँ फिर भी खंभा हमें लगे बिना रहता नहीं। उदाहरण के तौर पर, अपनी पत्नी टकरा जाती है।

दादाश्री : यह खोज निकालो कि जब वह टकराए, उस घड़ी आपको क्या करना चाहिए।

ऐसे टालो टकराव

आप गाड़ी से उतरे और तुरंत कुलियों को बुलाया, 'एय... इधर आ, इधर आ !' दो-चार कुली दौड़कर आते हैं। 'चल, उठा ले।' सामान उठाने के बाद, यदि बाहर निकलकर शोर मचाओ, झगड़ा करो कि 'स्टेशन मास्टर को बुलाता हूँ। इतने पैसे लेता है? तू ऐसा सब करता है...' अरे भाई, यहाँ पर मत टकराना। वह पच्चीस रुपए कहे तो उसे पटाकर कहना कि 'भाई, वास्तव में दस रुपए होते हैं लेकिन तू बीस ले, चल।' हम जानते हैं कि फँस गए हैं, इसलिए कम-ज़्यादा देकर निपटारा कर लेना है। वहाँ टकराव नहीं करना चाहिए, वर्ना वह बहुत चिढ़ जाएगा। वह घर से चिढ़कर ही आया होता है। फिर स्टेशन पर झिकझिक करेंगे तो ये तो भैंसे जैसा हैं, अभी चाकू मार देगा। तैंतीस मार्क्स पर मनुष्य बना, बत्तीस मार्क्स पर भैंसा बनता है।

यदि कोई आदमी लड़ने आए और बम के गोले जैसे शब्द आने लगें, तब आपको समझ लेना चाहिए कि टकराव टालना है। आपके मन पर बिल्कुल असर न हो, फिर भी कदाचित अचानक कोई असर हो जाए, तब समझना चाहिए कि हम पर सामने वाले के मन का असर पड़ा है। तब हमें खिसक जाना चाहिए। यह सब टकराव है। इसे जैसे-जैसे समझते जाओगे, वैसे-वैसे टकराव टलते जाएँगे। टकराव टालने से मोक्ष होता है।

टकराव से खड़ा हुआ संसार

यह संसार टकराव ही है, स्पंदन स्वरूप है इसलिए टकराव टालो, टकराव से यह जगत् खड़ा हो गया है। उसके लिए भगवान ने ऐसा कहा है, 'बैर से खड़ा हुआ है'। हर एक मनुष्य, अरे जीव मात्र बैर रखता है। ज़्यादा कुछ हुआ कि बैर रखे बगैर रहता नहीं है। वह फिर साँप हो, बिच्छू हो, बैल हो या भैंसा हो, कोई भी हो परंतु बैर रखता है क्योंकि सब में आत्मा है। आत्मशक्ति सभी में एक-सी है। क्योंकि यह *पुद्गल* की कमज़ोरी के कारण सहन करना पड़ता है। परंतु सहन करने के साथ ही वह बैर रखे बगैर रहता नहीं है और अगले जन्म में वह उनका बैर वसूलता है वापस!

प्रत्येक जीव स्वतंत्र है और खुद सुख खोजने आया है। वह दूसरों को सुख देने नहीं आया है। अब, उसे सुख के बजाय दुःख मिले तो बैर बाँधता है। फिर चाहे वह बीवी हो या बेटा हो।

प्रश्नकर्ता : सुख खोजने आए और दुःख मिले तो फिर बैर बाँधता है?

दादाश्री : हाँ, वह तो फिर भाई हो या बाप लेकिन अंदर ही अंदर उस बात का बैर बाँधता है। यह सारी दुनिया ऐसी है, बैर ही बाँधती है! स्वधर्म में किसी से बैर नहीं होता है।

बैर नहीं बढ़ाना

किसी के साथ बैर बंध जाए तो हमें पता चलता है न कि इसके साथ बैर है। मैं उसे परेशान नहीं करता हूँ, तो भी वह मुझे परेशान करता रहता है। अर्थात् उसके साथ बैर बंधा है, ऐसा पता चले तो उसके साथ *निकाल* करना और उस बैर का *निकाल* हुआ, वह सब से बड़ा पुरुषार्थ कहा जाएगा। यह जगत् बैर से ही खड़ा है। इसलिए बैर मत बाँधना। अपनी भूल हो जाए तो माफी माँग लेना और उस भूल का हल ला देना लेकिन केस खारिज़ कर देना। यह जगत् बैर से खड़ा है इसलिए किसी जगह बैर है तो आप उसकी क्षमापना करके भी, माफी माँगकर भी, उसके पैर छूकर भी, उसके साथ बैर मत बाँधना। और उसके साथ के बैर छुड़वा देना ताकि वह व्यक्ति खुश हो जाए कि, 'ना भाई, अब हर्ज नहीं है।' उसके साथ समाधान कर लेना, ताकि हमें रोके नहीं।

भगवान ने कहा था कि इस जन्म में तू नया बैर मत बढ़ाना और पुराना बैर छोड़ देना। पुराना बैर छोड़ दें तो कैसी शांति हो जाती है न! वर्ना लोग तो पहले मूछें मरोड़ते जाते हैं और बैर बढ़ाते जाते हैं लेकिन अब बैर नहीं बढ़ाना है। दिनोंदिन बैर कम करना है। 'दादा' का कोई बैरी नहीं है क्योंकि बैर का *निकाल* करके आए हैं। सभी बैर का *निकाल* करके हम इस जन्म में आए हैं और आपको यही सिखलाते हैं कि इस जन्म में अब बैर मत बढ़ाना।

कोई पेशन्ट ऐसे होते हैं कि वे पैसे नहीं देते बल्कि आपको धमकाते हैं। हम कहें कि, 'भाई, पैसे नहीं देंगे तो चलेगा' तो भी वह क्या कहेगा, 'डॉक्टर, मैं तुझे देख लूँगा।' 'अरे, हमें देखकर क्या करना है? हमें तो देख ही लिया है।' 'जैसे-तैसे करके केस खारिज़ कर देना।' ऐसा नहीं रखना कि कोर्ट में तारीखें पड़ती रहें। जिस दिन की तारीख आए न, हमें तो उसी दिन *निकाल* कर ही देना है। वर्ना कोर्ट में तारीखें पड़ती रहेंगी और फिर केस लंबा होता रहेगा और बैर बढ़ता रहेगा। ऐसा हमें करना ही नहीं है।

निश्चय करना कि समभाव से *निकाल* करना है

प्रश्नकर्ता : इसमें हमें मुख्य चीज़ *लक्ष* (जागृति) में रखनी चाहिए कि जगत् में समभाव से व्यवहार करें।

दादाश्री : बस, हमें समभाव से *निकाल* करना है। आपको तो सिर्फ आज्ञा का पालन करना है, उसी को कहेंगे 'समभाव से *निकाल* हो गया'। फिर सामने वाला नहीं करे वह बात डिफरन्ट मेटर (अलग) है। सामने वाला उल्टा चले तो उसमें हमें हर्ज नहीं है। हम ज़िम्मेदार नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगर हम सामने वाली फाइल के साथ एडजस्ट हो जाएँ, उसे समभाव से *निकाल* करना कहेंगे न?

दादाश्री : आपको तो, उस फाइल के आते ही मन में निश्चित हो जाना चाहिए कि 'फाइल के साथ झंझट है इसलिए अब समभाव से *निकाल* कर देना है'।

सामने वाला अन्याय करता है, आपकी भूल की वजह से

प्रश्नकर्ता : टकराव टालने की, समभाव से *निकाल* करने की हमारी वृत्ति होती है, फिर भी सामने वाला व्यक्ति हमें परेशान करे, अपमान करे तो क्या करना चाहिए हमें?

दादाश्री : कुछ नहीं। वह अपना हिसाब है, तो 'उसका समभाव से *निकाल* करना है' आपको ऐसा निश्चित रखना चाहिए। आपको अपने नियम में ही रहना चाहिए और अपने आप अपना पज़ल सॉल्व करते रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सामने वाला व्यक्ति अपना अपमान करे और हमें अपमान लगे, उसका कारण अपना अहंकार है?

दादाश्री : सच में तो सामने वाला अपमान करता है, तब आपका अहंकार पिघला देता है, और वह भी 'ड्रामेटिक' अहंकार। जितना एक्सेस अहंकार होता है वह पिघलता है, उसमें क्या बिगड़ जाने वाला है? ये कर्म छूटने नहीं देते हैं। हमें तो, छोटा बच्चा सामने हो तो भी कहना चाहिए, 'अब छुटकारा कर।'

आपके साथ किसी ने अन्याय किया और आपको ऐसा हो कि मेरे साथ यह अन्याय क्यों किया तो आपको कर्म बंधेगा क्योंकि आपकी भूल को लेकर सामने वाले को अन्याय करना पड़ता है। अब यहाँ कहाँ मति पहुँचे? जगत् तो कलह करके रख देता है! भगवान की भाषा में कोई न्याय भी नहीं करता और अन्याय भी नहीं करता। 'करेक्ट' करता है। अब इन लोगों की मति कहाँ से पहुँचे? घर में मतभेद कम हों, झंझट कम हो, आसपास वालों का प्रेम बढ़े तो समझना कि बात समझ में आ गई। नहीं तो बात समझ में आई ही नहीं।

ज्ञान कहता है कि तू न्याय खोजेगा तो तू मूर्ख है! इसलिए उसका उपाय है, तप!

किसी ने आपके साथ अन्याय किया हो तो वह भगवान की भाषा में 'करेक्ट' है, जिसे संसार की भाषा में गलत किया, ऐसा कहेंगे।

यह जगत् न्यायस्वरूप है, गप्प नहीं है। एक मच्छर भी आपको यों ही छू जाए, ऐसा नहीं है। मच्छर ने छुआ यानी आपका कोई कारण है। बाकी यों ही एक स्पंदन भी आपको छुए ऐसा नहीं है। आप संपूर्ण स्वतंत्र हो। किसी की दखल आप में नहीं है।

सामने वाला तो निमित्त मात्र

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ यह हुआ कि मन में समाधान कर लें कि जो माल था, वही वापस आया है?

दादाश्री : वह खुद शुद्धात्मा है और यह उसकी प्रकृति है। यह फल प्रकृति दे रही है। आप शुद्धात्मा हो, वह भी शुद्धात्मा है। अब दोनों

आमने-सामने सब हिसाब चुका रहे हैं। इसमें इस प्रकृति के कर्म के उदय से वह कुछ दे देता है इसलिए हमने कहा कि यह अपने कर्म का उदय है और सामने वाला निमित्त मात्र है। वह लौटा गया इसलिए अपना हिसाब चुक गया। जहाँ यह 'सोल्युशन' हो, वहाँ फिर सहन करने को रहता ही नहीं है न!

ज्ञान से जाँच लेना चाहिए कि सामने वाला 'शुद्धात्मा' है। यह जो आया है वह मेरे ही कर्म के उदय से आया है, सामने वाला तो निमित्त है। फिर यह ज्ञान इटसेल्फ ही पज़ल सॉल्व कर देगा।

रोंग व्यवहार के सामने खिलती हैं शक्तियाँ

कोई रोंग व्यवहार नहीं आए तो अपनी शक्ति भी नहीं खिलती इसलिए यह उपकार मानना कि 'भाई, तेरा उपकार। तूने मेरी कुछ शक्ति डेवेलप कर दी।'

प्रश्नकर्ता : ठीक है। हाँ, वह परम सत्य है।

दादाश्री : समझ लेंगे तो हल आएगा, वर्ना हल नहीं आएगा। धर्म पुस्तकों में नहीं होता, धर्म तो व्यवहार में ही होता है। धर्म कहीं पुस्तकों में होता होगा? आपको सिर्फ इस तरह रहना है कि 'मुझे व्यवहार में आदर्श रहना है।' ऐसी भावना रखनी है। व्यवहार बिगड़ना नहीं चाहिए और यदि बिगड़ जाए तो उसका समभाव से *निकाल* कर देना चाहिए।

अपने यहाँ थोड़ा-सा भी बखेड़ा या दखल कुछ रहता है? ज़रा मतभेद होता है, झंझट होती है, सब होता है लेकिन वह निकाली भाव, उसमें तांता नहीं है और फिर सुबह में चाय फर्स्ट क्लास बनती है। शाम को झगड़ा किया हो, नमक डाल दिया हो दूध में फिर भी सुबह चाय बनती है उस दूध से! बारह घंटे बाद भी दूध फट नहीं जाता।

प्रश्नकर्ता : हमें अपना मोक्ष का काम कर लेना है। फाइलें तो हमें छोड़ेंगी नहीं।

दादाश्री : कोई अपना नहीं बनता। यह आत्मा आपका बनेगा, और कोई नहीं बन सकता। 'मोक्ष में जाना है', वही अपना भाव है न! क्या पराया काम आएगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं आएगा।

दादाश्री : फिर भी व्यवहार को छोड़ नहीं सकते न? इसलिए *निकाल* कर लेना है, लोगों में बुरा न दिखे, उस तरह से।

फाइलें छूटती हैं वीतरागता से

प्रश्नकर्ता : सामने वाली पार्टी यदि तैयार नहीं हो तो समभाव से *निकाल* कैसे करें? एक हाथ से ताली कैसे बजाएँ?

दादाश्री : आप अपने मन में तय करना कि यह जो फाइल आ रही है, मुझे उसका समभाव से *निकाल* करना है, बस इतना ही करना है। सामने वाला ताली बजाए या नहीं, उससे आपको लेना-देना नहीं है। आप अपनी भावना बदलोगे तो तुरंत सब राह पर आ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : अब ये जो फाइलें हैं, वे तो सभी खत्म करनी पड़ेंगी न? छोटी या बड़ी, सभी फाइलें?

दादाश्री : उनको खत्म करने पर ही छुटकारा है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कुछ फाइलों का एक तरफा *निकाल* करें तो? फाइल का एक तरफा *निकाल* हो सकता है?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। फाइल का *निकाल* करना ही पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : कई बार हमें छूटना हो लेकिन सामने वाला नहीं छोड़े तो फिर खुद एक तरफा छूट सकते हैं या नहीं छूट सकते?

दादाश्री : छूट सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : किस तरह से?

दादाश्री : अपनी वीतरागता देखकर। वह तो यदि अपनी वीतरागता हो तो सब छूट सकता है। सामने वाला जमा करे या नहीं करे, हमें वह देखने की ज़रूरत नहीं है! वर्ना यदि ऐसा होता तो कोई छूटता ही नहीं, जगत् में।

प्रश्नकर्ता : हम समभाव से *निकाल* करें और कोई उसका दुरुपयोग करे तो करने देना?

दादाश्री : दुरुपयोग करने की किसी में शक्ति नहीं है और जितना दुरुपयोग होना है, वह बंद नहीं हो सकता। जितना दुरुपयोग होना है, उसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता और नया दुरुपयोग करने की किसी में शक्ति नहीं है। इसलिए घबराना नहीं। डर बिल्कुल निकाल देना, एक जन्म के लिए तो घबराहट निकाल देना आप। उसकी गारन्टी हमारे पास है।

समभाव से *निकाल* करना ही अपना धर्म

प्रश्नकर्ता : किसी भी संयोग में समभाव से *निकाल* ही करना है?

दादाश्री : समभाव से *निकाल* करना, बस इतना ही अपना धर्म है। ऐसी कोई फाइल आ जाए तो आपको तय करना है कि 'समभाव से *निकाल* करना है'। अन्य फाइलें तो एडजस्टमेन्ट वाली होती हैं, उनके लिए ऐसी बहुत ज़रूरत नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जहाँ टोटल डिसएडजस्टमेन्ट हो, वहाँ फिर क्या करना चाहिए?

दादाश्री : आपको मन में समभाव से *निकाल* करने का भाव तय करना है। 'समभाव से *निकाल* करना है' इतने ही शब्दों का उपयोग करना है।

'आज्ञा का पालन करना है,' इतना कहना है

प्रश्नकर्ता : यदि स्वभाव ही विरोधी हो तो फिर वह किस प्रकार चेन्ज हो सकता है?

दादाश्री : जगत् का मतलब ही है विरोधी स्वभाव। यदि उस विरोधी का *निकाल* नहीं करेंगे तो विरोध तो रोज़ ही आएगा और अगले जन्म में भी आएगा! उससे अच्छा है यहीं पर हिसाब चुका दो, उसमें क्या बुरा है? आत्मा प्राप्त होने के बाद हिसाब चुका सकते हैं।

'आज्ञा का पालन करना है' इतना कहना है बस। अन्य एडजस्टमेन्ट तो किसके हाथ में है? व्यवस्थित के हाथ में हैं।

आप समभाव से *निकाल* करने का तय करोगे तो आपका सब ठीक हो जाएगा। इस शब्द में जादू है। वह अपने आप ही सारा निबेड़ा ला देगा।

प्रश्नकर्ता : समभाव से *निकाल* करना, यानी सामने वाला व्यक्ति जो कुछ भी कहे, उसके लिए राज़ी हो जाएँ?

दादाश्री : वह कहे कि 'यहाँ बैठिए' तो बैठना। वह कहे 'बाहर निकल जाइए' तो बाहर चले जाना। वह व्यक्ति कुछ नहीं करता, यह सब तो व्यवस्थित करता है। वह बेचारा तो निमित्त है। बाकी, 'हाँ में हाँ' नहीं मिलानी है, बल्कि चंदू भाई किसके लिए राज़ी होते हैं या

मना कर रहे हैं, उसे 'आप' देखना और फिर 'हाँ में हाँ' मिलाना, ऐसी कोई सत्ता आपके हाथ में नहीं है। व्यवस्थित आपसे क्या करवाता है, उसे देखना है। यह तो आसान बात है, लोग इसे उलझा देते हैं।

समभाव से *निकाल* करने की हमारी आज्ञा का पालन करेंगे न तो एक बाल जितनी भी मुश्किल नहीं आएगी और वह भी सभी साँपों के बीच में!

निश्चय की ही ज़रूरत है

प्रश्नकर्ता : दादा, तो फिर ऐसा हुआ न कि समभाव से *निकाल* करने में कुछ कला भी चाहिए न?

दादाश्री : वह कला नहीं होगी तो भी ऐसा कहने से उसे कला आ जाएगी फिर। इतना बोले न 'दादा की आज्ञा का पालन करना है', फिर यदि कला नहीं आती होगी तो भी, क्योंकि आज्ञा पालन करता है, इसलिए आ जाएगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उससे पूरा-पूरा *निकाल* नहीं होगा न, अगर इस तरह कला के साथ-साथ एडजस्टमेन्ट करना नहीं आएगा तो?

दादाश्री : भला कला कहाँ से होगी, वह भी इस काल में? जीना ही नहीं आता तो वहाँ कला कहाँ से आएगी? ये सारी स्त्रियाँ मेरे पास आती हैं और कहती हैं, पति की परीक्षा लेकर देखिए! तो लाखों में से दो-तीन पास होंगे, अगर निष्पक्षपाती प्रकार से लूँ तो भी! पति है तो क्लेश क्यों होता है? मतभेद क्यों होता है? मतभेद होता है यानी तुझे पति होना आता नहीं है।

यह तो, समभाव से *निकाल* करने को कहा है, इसका मतलब इतना ही है कि जिन्होंने शादी की हैं, उन्हें तो हल निकालना ही पड़ेगा न! और उसमें भी अगर छुटकारा हो जाता है तो उस जैसा उत्तम कुछ भी नहीं है। छुटकारा तो लाना ही पड़ेगा न कभी न कभी।

जब तक सामने वाले के मन का समाधान नहीं होता तब तक परेशानी

घर में वाइफ के साथ मतभेद हो जाए तो उसका समाधान करना नहीं आता, बच्चों के साथ मतभेद खड़ा हो जाए तो उसका समाधान करना आता नहीं और उलझन में रहता है।

प्रश्नकर्ता : पति तो ऐसा ही कहता है न कि 'वाइफ' समाधान करे, मैं नहीं करूँगा।

दादाश्री : हं, यानी कि लिमिट पूरी हो गई। वाइफ समाधान करे और आप समाधान न करो तो आपकी लिमिट हो गई पूरी। खरा पुरुष हो न तो वह ऐसा बोले कि 'वाइफ' खुश हो जाए और ऐसे करके गाड़ी आगे बढ़ाए। और आप तो पंद्रह-पंद्रह दिनों तक, महीनों तक गाड़ी खड़ी रखते हो, ऐसा नहीं चलेगा। जब तक सामने वाले का मन का समाधान नहीं होगा तब तक आपको मुश्किल है। इसीलिए समाधान करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सामने वाले का समाधान हो गया, ऐसा किस तरह कहा जाएगा? सामने वाले का समाधान हो जाए लेकिन उसमें उसका अहित हो तो?

दादाश्री : वह आपको देखना नहीं है। यदि सामने वाले का अहित हो तो वह सामने वाले को देखना है। आपको सामने वाले का हिताहित देखना है लेकिन आप में, हित देखने वाले में, आप में शक्ति क्या है? आप अपना ही हित नहीं देख सकते, फिर दूसरे का हित क्या

देखते हो? सब अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार हित देखते हैं, उतना हित देखना चाहिए लेकिन सामने वाले के हित की खातिर टकराव खड़ा हो, ऐसा नहीं होना चाहिए।

जहाँ गाढ़ ऋणानुबंध हो वहाँ रखनी पड़ती है जागृति

प्रश्नकर्ता : सामने वाले का समाधान करने का हम प्रयत्न करें लेकिन उसमें परिणाम अलग ही आने वाला है, ऐसा हमें पता हो तो उसका क्या करना चाहिए?

दादाश्री : परिणाम कुछ भी आए, आपको तो 'सामने वाले का समाधान करना है' इतना निश्चित रखना है। समभाव से *निकाल* करने का निश्चित करो, फिर *निकाल* हो या न हो वह पहले से देखना नहीं है और *निकाल* होगा! आज नहीं तो दूसरे दिन होगा, तीसरे दिन होगा, गाढ़ा हो तो दो वर्ष में, तीन वर्ष में या चार वर्ष में होगा। वाइफ के ऋणानुबंध बहुत गाढ़ होते हैं, बच्चों के गाढ़ होते हैं, माँ-बाप के गाढ़ होते हैं, वहाँ ज़रा ज़्यादा समय लगता है। ये सब अपने साथ में ही होते हैं, वहाँ *निकाल* धीरे-धीरे होता है लेकिन हमने निश्चित किया है कि कभी न कभी 'हमें समभाव से *निकाल* करना ही है', इसलिए एक दिन उसका *निकाल* होकर रहेगा, उसका अंत आएगा। जहाँ गाढ़ ऋणानुबंध हों, वहाँ बहुत जागृति रखनी पड़ती है, इतना छोटा-सा साँप हो लेकिन सावधान और सावधान ही रहना पड़ता है और यदि बेखबर रहेंगे, अजागृत रहेंगे तो समाधान नहीं होगा। सामने वाला व्यक्ति बोल जाए और आप भी बोलो, बोल लिया उसमें हर्ज नहीं है परंतु बोलने के पीछे ऐसा निश्चय है कि 'समभाव से *निकाल* करना है' इसलिए आपको द्वेष नहीं रहता। बोला जाना, वह *पुद्गल* का है और द्वेष रहना, उसके पीछे 'खुद' का आधार है। इसलिए 'हमें तो समभाव से *निकाल* करना है', ऐसे निश्चित करके काम करते जाओ, हिसाब चुकता हो ही जाएँगे।

यह तो ऋणानुबंध से मुक्त होने का रास्ता है। ऋणानुबंध से मुक्त हुए बगैर छुटकारा नहीं होगा। इसलिए ऋणानुबंध खत्म करने हैं। जिससे गाली सुननी पड़े उसकी गाली सुन लो, जिससे मार खानी पड़े उससे मार खा लो, जिसकी सेवा करनी पड़े उसकी सेवा कर लो लेकिन सभी हिसाब चुकाने पड़ेंगे। बही-खाते में चित्रित किया है न! साफ तो करना पड़ेगा न? इसलिए साफ होने तक हमें हिसाब चुका देने हैं। प्रत्येक बात का समभाव से *निकाल* करना है!

प्रकृति को खपाना उसका नाम पुरुषार्थ

यह तो अपना ही हिसाब है। यह अपनी ही भूल की डिज़ाइन है, अपना ही प्रोजेक्शन है। ये जो भी दिखाई देते हैं न, वे सभी अपने ही प्रोजेक्शन हैं। अभी तक जानते नहीं थे इसलिए इन सभी उलझनों में उल्टा-सीधा हो गया लेकिन अब जब से जान लिया तभी से यह पुराना प्रोजेक्शन चाहे कैसा भी हो लेकिन अब नया तो हमारा अच्छा ही होगा न!

प्रश्नकर्ता : नया प्रोजेक्शन अच्छा होगा।

दादाश्री : हाँ। अब तो हमें प्रोजेक्शन करने को रहा ही नहीं। अब तो हम पुरुष (आत्मा) हो गए इसलिए पुरुषार्थ करने का रहा। पुरुषार्थ अर्थात् इस प्रकृति को खपाना, उसी को पुरुषार्थ कहते हैं! अपने पास जो प्रकृति है उसे खपाना है। प्रकृति को समभाव से खाली कर देना, उसी को कहते हैं 'पुरुषार्थ'।

- जय सच्चिदानंद

सही धन तो सुख देता है

यह तो *पूरण-गलन* है, उसमें जब *पूरण* (चार्ज होना, भरना) हो, तब हँसने जैसा नहीं है और *गलन* (डिस्चार्ज होना, खाली होना) हो, तब रोने जैसा नहीं। यदि *पूरण* होगा और हँसने की आदत पड़ गई होगी तो कोई भी मूर्ख बना देगा। जब दुःख का *पूरण* होता है, तब रोता क्यों है? *पूरण* में यदि तुझे हँसना हो तो हँस। *पूरण* अर्थात् सुख का *पूरण* होता है तब भी हँस और दुःख का *पूरण* होता है तब भी हँस। लेकिन इनकी तो भाषा ही अलग है न! पसंद और नापसंद, दोनों रखते हैं न? सुबह जो नापसंद हो, उसी को शाम को पसंद कर देता है। सुबह कहेगा, 'तू यहाँ से चली जा।' और शाम को उसे कहेगा कि, 'तेरे बिना मुझे अच्छा नहीं लगेगा।' यानी भाषा ही अनाड़ी लगती है न!

जगत् का नियम ही ऐसा है कि जो *पूरण* होता है, उसका *गलन* हुए बगैर रहता नहीं। यदि सभी लोग पैसे सिर्फ इकट्ठे कर रहे होते तो मुंबई में कोई भी व्यक्ति कह सकता था कि, 'मैं सबसे अधिक धनवान हूँ।' लेकिन ऐसी संतुष्टि की बात कोई कहता ही नहीं। क्योंकि नियम ही नहीं है ऐसा!

कुदरत क्या कहती है? 'उसने कितने रुपये खर्च किए, वह हमारे यहाँ नहीं देखा जाता। वह तो वेदनीय क्या भोगा, शाता या अशाता, उतना ही हमारे यहाँ देखा जाता है। रुपये नहीं होंगे तो भी शाता भोगेगा और रुपये होंगे फिर भी अशाता भोगेगा।' यानी जो कुछ भी शाता या अशाता वेदनीय भोगता है, वह रुपयों पर आधारित नहीं है। अभी यदि अपनी थोड़ी आमदनी हो, बिल्कुल शांति हो, कोई झंझट नहीं हो, तब हम कहेंगे कि, 'चलो, भगवान के दर्शन कर आएँ!' और ये जो पैसे कमाने में रह गए, वे तो ग्यारह लाख रुपये कमाए उसका हर्ज नहीं है, लेकिन अभी पचास हज़ार का नुकसान हो जाए तो अशाता वेदनीय खड़ी हो जाती है! 'अरे, ग्यारह लाख में से पचास हज़ार माइनस कर ले न!' तब वह कहेगा कि, 'नहीं, उससे तो रकम कम हो जाएगी न!' अरे, तू रकम किसे कहता है? कहाँ से आई यह रकम? वह तो ज़िम्मेदारीवाली रकम थी, इसलिए जब कम हो जाए तब शोर मत मचाना। यह तो, जब रकम बढ़े तब तू खुश हो जाता है और कम हो जाए तब? अरे, पूँजी तो 'भीतर' है, क्यों हार्ट फेल करके उस पूँजी को पूरा खो देना चाहता है? हार्ट फेल करे तो पूँजी पूरी खत्म हो जाएगी या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हो जाएगी।

दादाश्री : तो यह सब किसलिए? तब वह कहता है कि, 'लेकिन मेरे लिए तो वह पैसों की पूँजी क़ीमती है!' अरे, आपको भीतरवाली पूँजी की ज़रूरत नहीं है?

दस लाख रुपये पिता ने बेटे को देकर पिता कहें कि, 'अब मैं आध्यात्मिक जीवन जीऊँगा!' तो अब वह बेटा हमेशा शराब में, मांसाहार में, शेयरबाज़ार में, सभी में वह पैसा खो देता है। क्योंकि जो पैसे गलत रास्ते इकट्ठे हुए हैं, वे खुद के पास नहीं रहते। आज तो सही धन भी, सही मेहनत का धन भी नहीं रह पाता, तो गलत धन कैसे रहेगा? अर्थात् पुण्यवाले धन की आवश्यकता होगी। जिसमें अप्रमाणिकता नहीं हो, दानत साफ हो, वैसा धन होगा तो वह सुख देगा। नहीं तो, अभी तो दूषमकाल का धन, वह भी पुण्य का ही कहलाता है, लेकिन पापानुबंधी पुण्य का है। वह निरे पाप ही बँधवाएगा! इसके बजाय उस लक्ष्मी से कहना कि, 'तू आना ही मत, उतनी दूरी पर ही रहना।

उससे हमारी शोभा रहेगी और तेरी भी शोभा बढ़ेगी।' ये जो बंगले बनते हैं, उन सब में साफ तौर पर पापानुबंधी पुण्य दिखता है। इसमें यहाँ शायद ही कोई होगा, हज़ारों में एकाध व्यक्ति, कि जिसका पुण्यानुबंधी पुण्य होगा। बाकी ये सभी पापानुबंधी पुण्य हैं। इतनी लक्ष्मी तो होती होगी कभी भी? निरे पाप ही बाँध रहे हैं, कुछ भोगते-करते नहीं हैं और पाप ही बाँध रहे हैं। ये तो तिर्यंच की रिटर्न टिकट लेकर आए हुए हैं!

एक मिनट भी नहीं रहा जा सके, ऐसा है यह संसार! ज़बरदस्त पुण्य होते हुए भी भीतर दाह कम नहीं होता। अंतरदाह निरंतर जलता ही रहता है! चारों ओर से सभी फर्स्ट क्लास संयोग हों फिर भी अंतरदाह चलता ही रहता है, अब वह मिटे कैसे? पुण्य भी अंत में खत्म हो जाते हैं। दुनिया का नियम है कि पुण्य खत्म हो जाते हैं। तब क्या होता है? पाप का उदय होता है। यह तो अंतरदाह है। पाप के उदय के समय जब बाहरी दाह उत्पन्न होगा, उस घड़ी तेरी क्या दशा होगी? इसलिए भगवान ऐसा कहते हैं कि 'सावधान हो जा।'

प्रश्नकर्ता : पाप और पुण्य, वे भला क्या हैं?

दादाश्री : ऐसा है, इस दुनिया को चलानेवाला कोई नहीं है। यदि कोई चलानेवाला होता तो पाप-पुण्य की कोई ज़रूरत नहीं थी। पाप और पुण्य का अर्थ क्या है? क्या करेंगे तो पुण्य मिलेगा? इस जगत् के लोग, हर एक जीव, वे भगवान स्वरूप ही हैं। ये पेड़ हैं, उनमें भी जीव है। अब लोग ऐसा भी कहते ज़रूर हैं लेकिन वास्तव में वैसा उनकी श्रद्धा में नहीं है। इसलिए पेड़ को काटते हैं, तोड़ते हैं, सभी कुछ करते हैं। उन्हें यों ही ऐसे तोड़ते रहते हैं, यानी कि बहुत नुकसान करते हैं। जीवमात्र को किसी भी प्रकार का नुकसान पहुँचाने से पाप बँधते हैं और किसी भी जीव को किसी भी प्रकार से सुख देने पर पुण्य बँधते हैं। आप बग़ीचे में पानी छिड़कते हो तो जीवों को सुख होता है या दुःख? वह जो सुख देते हो उससे पुण्य बँधता है। किसी भी जीव को थोड़ा भी त्रास दो, उससे पाप बँधता है। बस, इतना ही समझना है।

पूरा जगत् भगवान स्वरूप ही है। अब, ये जो सब दुश्मन और मित्र दिखते हैं, वह सब भ्रांति है। वह भ्रांतिज्ञान दूर हो जाए तो सभी तरफ शुद्धात्मा ही है। बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट वह गधा है और बाइ रियल व्यू पोइन्ट वह शुद्धात्मा है। अत: यदि किसी भी जीव को किंचित्मात्र सुख या दुःख पहुँचाया तो उससे हम पर पुण्य या पाप का असर होता है और फिर वह असर हमें भोगना पड़ता है।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

18 मार्च : अडालज त्रिमंदिर संकुल में दादानगर हॉल में आयोजित ज्ञानविधि में 1750 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

19 मार्च : पूज्य नीरू माँ की 11वीं पुण्यतिथि के अवसर पर सीमंधर सिटी में सुबह प्रभात फेरी की गई जो पूज्य नीरू माँ की समाधि पर पहुँची। प्रभात फेरी में प्रसिद्ध दादाई पद DJ सिस्टम पर बजाए गए। प्रभात फेरी में सभी को शांति के प्रतीक के रूप में सफेद रंग के गुब्बारे दिए गए। समाधि पर महात्माओं द्वारा समुह में नित्यक्रम, प्रार्थना और विधि की गई। समाधि पर आशीर्वचन देते हुए पूज्यश्री ने पूज्य नीरू माँ के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए कहा। दादानगर हॉल में स्पेश्यल सिडी दिखाई गइ जिसमें यह बताया गया कि किस प्रकार से पूज्य दादाश्री ने पूज्य नीरू माँ का सिंचन किया। बाद में एक घंटा जगत कल्याण के लिए कीर्तन भक्ति हुई। शाम को आप्तसिंचन के 10 साधक और 16 साधिकाओं की समर्पण विधि का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। पत्येक साधक ने बारी-बारी से पूज्यश्री, अपने माता-पिता और आत्मीय जनों एवम् महात्माओं से आशीर्वाद लिए। कुछ साधकों ने खुद के हृदय स्पर्शी अनुभव बताए। चार आप्तकुमार भाईयों को आप्तपुत्र और तीन आप्तकुमारी बहनों को आप्तपुत्री पद से नवाज़ा गया। लगभग पंद्रह हज़ार से अधिक महात्माओं की उपस्थिति से दादानगर हॉल पूरी तरह से भर गया था। रात को भक्ति का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ।

22-24 मार्च : इस साल से भाईयों के लिए आप्तसिंचन केम्पस सेफ्रोनी कॉलेज के सामने मेहसाणा जिले के लींच गाँव में शिफ्ट हुआ। इससे पहले आप्तसिंचन के भाई अहमदाबाद के 'दादा दर्शन' बिल्डिंग में साधना करते थें। साधकों की बढ़ती संख्या व उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लींच गाँव के सुंदर और शांत वातावरण में साधना के लिए अनुकूल सभी प्रकार की सहूलियत वाला केम्पस तैयार किया गया। जिसमें भोजनालय, साधक निवास, क्लास रूम, गार्डन सत्संग हॉल एवम् 13 फीट के विशाल सीमंधर स्वामी की भी स्थापना हुई है।

लींच में पूज्यश्री की निश्रा में आप्तसिंचन के साधकों के लिए तीन दिवसीय वार्षिक शिविर का आयोजन हुआ। शिविर का मुख्य हेतु यही है कि पूज्यश्री का सानिध्य प्राप्त हो सके। इन्फोर्मल सत्संग, दर्शन, व्यक्तिगत मार्गदर्शन, नाटक, भक्ति, गरबा, मॉर्निंग वॉक जैसे विविध कार्यक्रमों से सभी साधक आनंदित हो उठे थें।

26 मार्च : गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय भाई रूपानी त्रिमंदिर दर्शन के लिए आए और पूज्यश्री से मिलने उनके निवास स्थान 'वात्सल्य' में गए। पूज्यश्री की रूपानी साहब के साथ अक्रम विज्ञान और परम पूज्य दादा भगवान के बारे में सामान्य बातें हुई।

29 मार्च : पूज्यश्री ने यू.के. और जर्मनी सत्संग प्रवास के लिए सीमंधर सीटी से प्रस्थान किया।

31 मार्च से 2 अप्रैल : यू.के. के लेस्टर शहर में पूज्यश्री के सत्संग और ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। वहाँ 95 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

9 से 16 अप्रैल : पहली बार पूज्यश्री के साथ भारत, अमरीका, केनेडा, यू.के. आफ्रिका, दुबई, जर्मनी, न्यूझीलैन्ड, ओस्ट्रैलिया, सिंगापुर जैसे देशों से 1300 महात्माओं ने क्रूज़ में रहने एवम् घूमने का अमूल्य लाभ प्राप्त किया। क्रूज़ की शुरूआत इटली के वेनिस शहर के पोर्ट से हुई और वहीं पर ही खत्म हुई। क्रूज़ के दरमियान हर रोज़ महात्मा पूज्यश्री के साथ ग्रीस और इटली के अलग-अलग टापुओं पर गए। पूज्यश्री ने वहाँ के म्यूज़ियम और चर्च के दर्शन करते समय जगत कल्याण की भावना की थी। क्रूज़ में पूज्यश्री के साथ ईन्फोर्मल सत्संग, भक्ति-गरबा और व्यक्तिगत दर्शन जैसे कार्यक्रम आयोजित हुए। क्रूज़ में अचानक ज्ञानविधि घोषित करने से महात्मा आश्चर्यचकित हो उठे, ज्ञानविधि में 30 लोगों ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पूणे	दि : 17-18 जून	**संपर्क :** 7218473468

मध्य प्रदेश

इन्दौर	दि : 1 जुलाई	**संपर्क :** 9039936173
इन्दौर	दि : 2 जुलाई	**संपर्क :** 9039936173
अंजड़	दि : 3 जुलाई	**संपर्क :** 9617153253
उज्जैन	दि : 5 जुलाई	**संपर्क :** 9425195647
होशंगाबाद	दि : 6 जुलाई	**संपर्क :** 9424402646
भोपाल	दि : 7 जुलाई	**संपर्क :** 9425024405
भोपाल	दि : 8 जुलाई	**संपर्क :** 9425024405
जबलपुर	दि : 9 जुलाई	**संपर्क :** 9425160428
जबलपुर	दि : 10 जुलाई	**संपर्क :** 9425160428
दमोह	दि : 11 जुलाई	**संपर्क :** 9926985853
ग्वालियर	दि : 12 जुलाई	**संपर्क :** 9926265406
ग्वालियर	दि : 13 जुलाई	**संपर्क :** 9926265406

दक्षिण भारत

हैदराबाद	दि : 8 जुलाई	**संपर्क :** 9885058771
हैदराबाद	दि : 9 जुलाई	**संपर्क :** 9885058771
नेल्लोर	दि : 10 जुलाई	**संपर्क :** 9493999052
कोईम्बतूर	दि : 11 जुलाई	**संपर्क :** 9677573104
तिरुपूर	दि : 12 जुलाई	**संपर्क :** 9327010101
तिरुचिरापल्ली	दि : 13 जुलाई	**संपर्क :** 8807055114
मदुराई	दि : 14 जुलाई	**संपर्क :** 9629230165
चेन्नई	दि : 15 जुलाई	**संपर्क :** 7200740000
चेन्नई	दि : 16 जुलाई	**संपर्क :** 9380159957

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'साधना' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA
- '**TV Asia**' पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus.
- **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

Pujya Deepakbhai's USA Satsang Schedule 2017

Contact no. for all centers in USA : +1-877-505-DADA (3232) &
email for USA - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact no. & Email
15-Jun	Thu	Brasilia	Satsang	10:30 AM	12:30 PM	Golden Tulip Brasília Alvorada SHTN Trecho 1, Conj. 1B, Bloco C - Asa Norte, **Brasilia, Brazil** 70800-200	+55(62)99975-3532 brazil2017@ br.dadabhagwan.org
15-Jun	Thu	Brasilia	Satsang	4:30 PM	7:00 PM		
16-Jun	Fri	Brasilia	Satsang	10:00 AM	12:30 PM		
16-Jun	Fri	Brasilia	Gnanvidhi	2:30 PM	8:00 PM		
17-Jun	Sat	Brasilia	Aptaputra Satsang	10:00 AM	12:30 PM		
17-Jun	Sat	Brasilia	Satsang	4:30 PM	7:00 PM		
18-Jun	Sun	Brasilia	Parayan	4:30 PM	7:00 PM		
19-Jun	Mon	Brasilia	Parayan	10:00 AM	12:30 PM		
26-Jun	Mon	Silver Spring	Aptaputra Satsang	6:30 PM	9:30 PM	Mangal Mandir, 17110 New Hampshire Ave, MD, 20905	Extn. 1010 mddcva@ us.dadabhagwan.org
27-Jun	Tue	Richmond	Satsang	6:00 PM	9:00 PM	Deep Run High School, 4801 Twin Hickory Rd, VA, 2059	Extn. 1031 richmond@ us.dadabhagwan.org
28-Jun	Wed	Richmond	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
28-Jun	Wed	Richmond	Gnanvidhi	6:00 PM	9:00 PM		
29-Jun	Thu	Richmond	Aptaputra Satsang	6:00 PM	9:00 PM		
5-Jul	Wed	Philadelphia	GP Shibir	10:00 AM	12:30 PM	Philadelphia Marriott Downtown 1201 Market Street, PA, 19107	Extn. 10 gp@ us.dadabhagwan.org
5-Jul	Wed	Philadelphia	GP Shibir	4:30 PM	7:00 PM		
6-Jul	Thu	Philadelphia	GP Shibir	10:00 AM	12:30 PM		
6-Jul	Thu	Philadelphia	GP Shibir	4:30 PM	7:00 PM		
7-Jul	Fri	Philadelphia	Satsang	10:00 AM	12:30 PM		
7-Jul	Fri	Philadelphia	Gnanvidhi	4:30 PM	7:00 PM		
8-Jul	Sat	Philadelphia	Sim. Swami Pran Pratistha	10:00 AM	12:30 PM		
8-Jul	Sat	Philadelphia	GP Shibir	4:30 PM	7:00 PM		
9-Jul	Sun	Philadelphia	Gurupujan	10:00 AM	12:30 PM		
9-Jul	Sun	Philadelphia	Gurupujan	4:30 PM	10:00 PM		
10-Jul	Mon	Philadelphia	GP Shibir	10:00 AM	12:30 PM		
15-Jul	Sat	Boston	Satsang	6:00 PM	9:00 PM	Boston Marriott Burlington 1 Burlington Mall Road, MA, 01803	Extn. 1016 boston@ us.dadabhagwan.org
16-Jul	Sun	Boston	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
16-Jul	Sun	Boston	Gnanvidhi	5:30 PM	8:30 PM		
17-Jul	Mon	Boston	Aptaputra Satsang	6:30 PM	9:00 PM		
18-Jul	Tue	Chicago	Satsang	6:30 PM	9:30 PM	Jain Temple, 435 North Illinois Rt. 59, IL, 60103	Extn. 1005 chicago@ us.dadabhagwan.org
19-Jul	Wed	Chicago	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
19-Jul	Wed	Chicago	Gnanvidhi	5:30 PM	9:00 PM		
19-Jul	Wed	Chicago	Aptaputra Satsang	6:30 PM	9:00 PM		
22-Jul	Sat	Toronto	Satsang	5:00 PM	8:00 PM	Sringeri Vidya Bharati Foundation, 80 Brydon Drive, Ontario, M9W4N6	Extn. 1006 toronto@ ca.dadabhagwan.org
23-Jul	Sun	Toronto	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
23-Jul	Sun	Toronto	Gnanvidhi	5:30 PM	8:30 PM		
27-Jul	Thu	Columbia	Aptaputra Satsang	5:00 PM	8:00 PM	Rodeway Inn & Conference Center, 773 Saint Andrews Road, SC, 29210	Extn. 1035 columbia@ us.dadabhagwan.org
29-Jul	Sat	Raleigh	Satsang	5:30 PM	8:30 PM	Hindu Society of North Carolina Temple, 309 Aviation Pkwy, NC, 27560	Extn. 1003 raleigh@ us.dadabhagwan.org
30-Jul	Sun	Raleigh	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
30-Jul	Sun	Raleigh	Gnanvidhi	5:00 PM	8:00 PM		
1-Aug	Tue	Atlanta	Satsang	7:00 PM	9:30 PM	Gujarati Samaj of Atlanta 5331 Royalwood Parkway, GA, 30084	Extn. 1011 atlanta@ us.dadabhagwan.org
2-Aug	Wed	Atlanta	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
2-Aug	Wed	Atlanta	Gnanvidhi	6:00 PM	9:00 PM		
3-Aug	Thu	Atlanta	Aptaputra Satsang	7:00 PM	9:30 PM		
5-Aug	Sat	Los Angeles	Satsang	5:30 PM	8:30 PM	Sanatan Dharma Temple 15311 Pioneer Blvd., CA, 90650	Extn. 1009 losangeles@ us.dadabhagwan.org
6-Aug	Sun	Los Angeles	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
6-Aug	Sun	Los Angeles	Gnanvidhi	5:00 PM	8:00 PM		

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

सुरत

19 मई (शुक्र), रात 8 से 11 – **सत्संग** (टोपिक – लक्ष्मी के संबंध में भय से कैसे मुक्त हो ?)

20 मई (शनि), रात 8 से 11 – **सत्संग** (टोपिक – बैर से बढ़ा संसार)

21 मई (रवि), शाम 5-30 से 9 – **ज्ञानविधि**

22 मई (सोम), रात 8 से 11 – **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : SMC पार्टी प्लोट, ज्योतिन्द्र दवे गार्डन के नजदीक, प्राईम आर्केड के आगे, न्यु रांदेर रोड. **संपर्क :** 9574008007

अडालज में हिन्दी सत्संग शिविर – वर्ष 2017

25 मई (गुरु) सुबह 10 से 12 – **प्रश्नोत्तरी सत्संग** तथा शाम 5 से 7-30 – **पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार – सत्संग**

26 मई (शुक्र) सुबह 9-30 से 12 तथा शाम 5 से 7-30 – **पूज्यश्री द्वारा विशेष सत्संग (MMHT / WMHT)**

27 मई (शनि) सुबह 9-30 से 12 – **माता-पिता बच्चों का व्यवहार – सत्संग** तथा शाम 4 से 7-30 – **ज्ञानविधि**

28 मई (रवि) सुबह 9-30 से 12 – **शिविरार्थीओं के लिए दर्शन** तथा **प्रतिक्रमण – पारायण**
शाम 5 से 7-30 –**पाँच आज्ञा पर विशेष सत्संग**

29 मई (सोम) **पूज्यश्री दीपकभाई से संग विशेष कार्यक्रम**

नोट : – *हिन्दी शिविर के दौरान इस साल यात्रा रद्द की गई है, उसके बजाए उस दिन शिविर जारी रहेगी*

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। **इस शिविर के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।** रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

अडालज में अविवाहित युवकों के लिए हिन्दी में ब्रह्मचर्य शिविर – दि. 30-31 मई, 2017

जो युवक इस ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते है, उसकी उम्र २१ से ३५ के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम १ साल हुआ होना जरूरी है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए 9924343150 / 9924307773 पर संपर्क करें।

अडालज त्रिमंदिर

12 अगस्त (शनि), शाम 4 से 7 – **सत्संग** तथा **13 अगस्त** (रवि), सुबह 10 से 12 – **आप्तपुत्र सत्संग** (मुमुक्षुओं के लिए)

13 अगस्त (रवि) शाम 4 से 7-30 – **ज्ञानविधि**

15 अगस्त (मंगल) रात 10 से 12 – **जन्माष्टमी** के अवसर पर विशेष भक्ति का कार्यक्रम

18 अगस्त से 25 अगस्त (शुक्र से शुक्र) **पर्युषण पारायण – आप्तवाणी 13 (उ.)** पर **वाँचन-सत्संग**

26 अगस्त (शनि) सुबह 10 बजे से – **पूज्यश्री के दर्शन** का विशेष कार्यक्रम

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 9924348880 / 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 30 जुलाई 2017 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

2) पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-13 (उ.) (गुजराती) पर वाचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समझ सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते है।) 3) ओढ़ने-बिछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ।

4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

मई 2017
वर्ष - 12 अंक - 7
अखंड क्रमांक - 139

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

प्रतिकूल संयोगों में सभी जगह एडजस्ट हो जाना

आजकल तो ऐसा है कि अड़ोसी-पड़ोसी, पार्टनर, भाई, पत्नी, बच्चे, सभी तप करवाते हैं ! तो मुफ्त का तप मिला है तो शांति से सहन कर लो न! पहले के काल में तो घर में ही अनुकूलता रहती थी। यह प्रतिकूल काल आया है, घर बैठे ही प्रतिकूलता है, बाहर ढूँढने नहीं जाना पड़ता। यह काल ही ऐसा है कि कहीं भी एडजस्टमेन्ट हो ही नहीं पाता। घर में, बाहर, पड़ोसी, सभी तरफ से डिसएडजस्टमेन्ट आता रहता है, उसे तू सहन कर और एडजस्ट हो जा।

किसी के साथ 'डिसएडजस्ट' होंगे तो वे मारेंगे। उसके बजाय हम तय करें कि उनके साथ 'एडजस्ट' होकर काम लेना है। जो 'एडजस्टमेन्ट' सीख गया, वह पार उतर गया।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.